

# Shri Adishakti Puja

Date : 11th December 1994  
Place : Jaipur  
Type : Puja  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 21
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	22 - 32
Hindi	-
Marathi	33 - 38

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आज हम लोग आदिशक्ति का पूजन कर रहे हैं। जिसमें सब कुछ आ जाता है। बहुत से लोगों ने आदिशक्ति का नाम भी नहीं सुना। हम लोग शक्ति के पुजारी हैं, शाक्तधर्मी हैं और विशेष कर राजे-महाराजे सभी शक्ति की पूजा करते हैं। सबकी अपनी-2 देवियाँ हैं और उन सब देवियों के नाम अलग-2 हैं। यहाँ की देवी का नाम भी अलग है, गणगौर। लेकिन आदिशक्ति का एक बार अवतरण इस राजस्थान में हुआ जो वो सती देवी के रूप में यहाँ प्रकट हुई। उनका बड़ा उपकार है जो राजस्थान में अब भी अपनी संस्कृति, स्त्री धर्म, पति का धर्म, पत्नी का धर्म, राजधर्म हरेक तरह के धर्म को उनकी शक्ति ने प्लावित किया, Nourish किया।

सती देवी की गाथा आप सब जानते हैं। मुझे नए तरीके से बताने की जरूरत नहीं; पर वे स्वयं गणगौर थीं। उनका विवाह कर दिया गया परन्तु विवाह करके जब वो जा रही थीं तब कुछ गुण्डों ने घेर लिया और उनके पति को भी मार दिया। तब पालकी से बाहर आ कर उन्होंने अपना रूद्र रूप धारण किया और सबका सर्वनाश करते हुए खुद भी उन्होंने अपना देह त्याग दिया। इसमें जो विशेष चीज जानने की है कि बचपन से शादी होने तक किसी भी हालत में उन्होंने अपना स्वरूप किसी को बताया नहीं क्योंकि वो

महामाया स्वरूप थी।

आदिशक्ति को महामाया स्वरूप होना जरूरी है क्योंकि सारा ही शक्ति का जिसमें समन्वय हो, प्रकाश हो और हर तरह से जो हरेक शक्ति की अधिकारिणी हो उसे महामाया का ही स्वरूप लेना पड़ता है। उसका कारण ये है कि जो प्रचण्ड शक्तियाँ इस स्वरूप में संसार में आती हैं, सबसे पहले सुरुभि के रूप में आई थी ये शक्ति, जो एक गाय थी। उसमें सारे ही देवी देवता बसे हैं और उसके बाद एक बार सती देवी के रूप में, एक ही बार इस राजस्थान में अवतरित हुई। मैंने आपसे बताया कि मेरा संबंध इस राजस्थान से बहुत पुराना है क्योंकि हमारे पूर्वज राजस्थान के चित्तौड़गढ़ के सिसौदिया वंश के थे।

आदिशक्ति को अनंत शक्तियाँ हैं और ऐसी कोई शक्ति नहीं जो उनके पास नहीं। लेकिन उन शक्तियों को छिपा कर ही रखना पड़ता है। उसके दो कारण हैं। एक तो कारण ये कि लोग गर जान जाए कि ये आदिशक्ति हैं तो हर प्रकार के लोग उन पर प्रहार कर सकते हैं क्योंकि ये लोग सब बिल्कुल दुष्ट हैं, जाहिल हैं और परमात्मा के विरोध में खड़े हैं। भगवान के नाम पर पैसा कमाते हैं और उसका दुर्व्यवहार करते हैं। ये सारे ही लोग गर जान जाए कि

आदिशक्ति संसार में आई हैं तो या तो भाग खड़े होंगे या सब जुट कर के ये कोशिश करेंगे कि किसी तरह से आदिशक्ति का कार्य इस कलयुग में हो न पाए। उसके लिए बहुत जरूरी है कि महामाया का स्वरूप ले लिया जाए। दूसरा इस स्वरूप से एक बड़ा गहरा काम, सूक्ष्म काम करना है जो कभी भी किसी ने आज तक नहीं किया। वो है सामूहिक चेतना। सामूहिक तो छाँड़िये, एक ही आदमी को पार कराने में लोगों को सालों लग जाते हैं। इस कार्य को करने में और वो भी बखूबी इस तरीके से कि किसी को कोई भी हानि नहीं पहुँचे। ऐसे ही जैसे नाव में बिठा करके आराम से दूसरे किनारे पहुँचाया जाए! मैंने कल भाषण अपने में बताया कि धर्म कितना विपरीत हो गया है। धर्म की बातें जिन्होंने करीं वो तो ठीक थे लेकिन जिनसे कहीं वो लोग गड़बड़ थे। सो उन्होंने धर्म को समझा नहीं, धर्म को एक बड़ी भ्रान्ति में डाल दिया कि गर कोई आदमी यह सोचने लग जाए-अपने धर्म के बारे में तो वो भाग खड़ा हो जाए क्योंकि धर्म के नाम के पीछे जो-जो तौर तरीके हैं वो बहुत भयंकर हैं। कहीं तो स्त्रियों की अवहेलना, कहीं तो बच्चों का दमन, तो कहीं लूटमार। हर तरह के गलत काम धर्म के नाम पर होते हैं। एक बार बंबई में बहुत सी गीता छप करके बाहर से आई, तो लोग बड़े खुश हुए कि अब हमारी गीता लंदन में छपने लगी। इससे बढ़ करके और क्या बात होगी! हिन्दुस्तानी तो वैसे ही अंग्रेज के पैर पे लोटता रहा और अब गीता अगर वहाँ छप गई तो हिन्दुस्तानियों ने सोचा वाह-2, कि वाह क्या कमाल हो गया! पर एक कोई थे कस्टम

आफिसर, उनके दिमाग में आया कि आज तक कोई अंग्रेज सीधी-सादी हमारी हिन्दी भाषा नहीं बोल सकता तो ये कौन माई का लाल निकला है जिसने गीता को लिखा है संस्कृत में। कुछ तो गड़बड़ होगी। तो उन्होंने एक किताब खोली तो देखा कि उसमें व्हिस्की! समझ गए, सारी किताबों के अंदर व्हिस्की और ऊपर से गीता। तो मतलब ये कि गीता बहुत उच्च चीज़ है हिन्दुस्तानियों के लिए, गीता का नाम लेते ही चाहे वो कुछ जाने या ना जाने, माथे पर लगा लेते हैं। लेकिन... अंग्रेजों में इस तरह से जो छिपाने की शक्ति है वो कमाल की है, कि गीता को इस्तेमाल करो। कोई सी भी समझ लीजिए यहाँ टेबल गंदी हो गई तो उसमें फौरन हम प्लास्टिक बिछा कर दूसरा टेबलक्लाथ बिछा कर उसको हम सुन्दर कर लेंगे और बार-बार मैं भी देखता हूँ कि कहीं भी जाइये तो बहुत से पर्दे लगे होंगे। मैंने कहा ये क्या है तो कुछ नहीं, कुछ नहीं। पर्दा हटाइये तो ऊपर से बहुत सारे गंदे कपड़े, ये वो। सो ऐब छिपाने की भी हमारे महामाया शक्ति में एक बहुत बड़ी त्रुटि है। क्योंकि ये लोग कहीं से कुछ सीख कर आए ही होंगे। चाहे हमने नहीं सिखाया हो पर किसी ने तो सिखाया हो होगा कि ये ऐब अपने कैसे छिपाए जाएँ और छिपा के उसको कैसे पचा लिया जाए। जो हमारे ऐब हैं उसको हटाने के लिए हम प्रयत्नशील नहीं होते। उसको छिपाने में प्रयत्नशील होते हैं और दूसरों के ऐब देखने में हम बड़े होशियार होते हैं। अब ये बिल्कुल विपरीत बात है। महामाया की शक्ति इसलिए बनी है और विकीर्णित हुई कि आपके अंदर जो दोष हैं



वो निकाले जाएँ और उसको अपने शरीर में आत्मसात किया जाए और फिर उसकी सफाई की जाए।

ये कार्य बड़ा कठिन है, ऐसा मुझे लगता था शुरू-2 में। लेकिन ऐसे कोई खास ऐव वाले लोग आए नहीं मेरे पास जो कि मुझे बड़ा दुःख उठाना पड़े, सही बात तो ये है। वो लोग मुझे देखते ही भाग जाते हैं शायद इसलिए ये मेरे सामने कभी प्रश्न खड़ा नहीं हुआ। पर आश्चर्य की बात है कि जो लोग भूत से ग्रसित हैं या जो लोग हमेशा बुरे काम करते हैं और जो लोग गुरुघंटाल हैं वो सब मुझे अच्छी तरह से जानते हैं, ना जाने कैसे! या तो उनकी आंखें पीछे की ओर हैं या जो भी कहिए वो मुझे पहले पहचानते हैं। सहजयोगी नहीं पहचान पाते। हो सकता है उनकी आंखें चकाचौंध हो जाती हों, मुझे समझ में नहीं आता। पर आप किसी भी भूत ग्रस्त आदमी को ले आइये। वो थर-थर काँपने लगेगा और ऐसा भागेगा कि सोचे जैसे किसी ने हंटर मारा है। लेकिन सहजयोगियों का ऐसा नहीं। उनको पहचान भी इतनी नहीं है। अच्छी बात है, क्योंकि आदिशक्ति का एक स्वरूप जो महाकाली का है उसे आप देख लें तो वो पूरा गया काम से, भयंकर है, ये देख सकते हैं! हाथी-आथी भी देख सकते हैं। घोड़े भी देख सकते हैं। पर बाकी किसी को दिखाना बड़ी कठिन बात है। न जाने यहाँ-कितने लोग बैठेंगे?

लेकिन महाकाली का स्वरूप होना बहुत जरूरी है। जब तक महाकाली प्रकट नहीं होती। आपके अंदर बसी बाई ओर (left side) को पकड़ जा नहीं सकती। बाई ओर (Left side)

को पकड़ का मतलब क्या है? सबसे पहले तो आप अपने Past के बारे में सोचते रहते हैं। दूसरी बात कि मेरे बाप ये थे और मेरे बाप के बाप ये थे, ये सोचते रहते हैं। नसीब है उनको अपना पूर्वजन्म याद नहीं आता, पर ये पूछेंगे मैं पूर्वजन्म में कौन था? अब मैं, एक साहब ने मुझे बहुत तंग किया मैं पूर्वजन्म में कौन था, कौन था? फिर मैंने कहा देखो बेटे मैं तुमको नहीं बता रही हूँ तो इसका मतलब कुछ गड़बड़ी है। क्यों मुझसे पूछ रहे हो? इस जन्म में अच्छा है तुम मेरे साथ हो। क्यों मुझे बार-बार पूछ रहे हो? इस जन्म में अच्छा है तुम मेरे साथ हो। क्यों मुझे बार-2 पूछ रहे हो कि मैं पूर्वजन्म में कौन था। उससे तुम्हारा क्या लाभ होने वाला है। नहीं मुझे अच्छा लगेगा। अच्छा अगर मैंने कहा कि तुम पूर्वजन्म में जयपुर के महाराजा थे, समझ लो, तो तुमको क्या गद्दी मिल जाएगी? वहाँ जाओगे तो वहाँ से भगा देंगे सब। तो पूर्वजन्म की बात क्यों करते हो? क्योंकि मुझे एक ज्योतिषी ने बताया था कि मैं पूर्वजन्म में कहीं का राजा था? मैंने कहा लक्षण तो दिखते नहीं तुम्हारे अंदर राजा होने के। अब तुमको ज्योतिषी ने बताया, तुमसे पैसे एंटने के लिए। तुमने राजा जैसे कुछ गले का कंठा वंठा दिया उसको कि बस ऐसे ही पैसों में टाल दिया? उन्होंने कहा कि आप मजाक कर रहे हैं। मैंने कहा कि तुम बेवकूफी की बात कर रहे हो तो मैं क्या करूँ? यहाँ तुम अपनी पूर्वजन्म पूछने के लिए मेरे पास आए। मैं कोई ज्योतिष शास्त्र तो जानती नहीं हूँ। मुझे इसमें कोई भी, किसी भी तरह की दिलचस्पी नहीं है। तुम ज्योतिष शास्त्री

के पास जाओ और वो तुमसे कहेगा, तुम इंग्लैंड के राजा थे तो दे दो उसको कुछ। इंग्लैंड के राजा खगैरह कुछ नहीं देते जैसे। उधर के लोगों में विश्वास ही नहीं। अब इसी बात को ले कर बैठ गए कि पिछले जन्म में मैं ये था और पिछले जन्म में वो था। तब महाकाली का स्वरूप अगर दिखाएँ तो सारे ही जन्म भूल जाएँगे! इसकी बहुत जरूरत है। महाकाली के स्वरूप के सिवाय ऐसे पागल छूट नहीं सकते। अब मैंने देखा कि जो भागे तो फिर आए नहीं। फिर उन्होंने सामना नहीं किया मेरा। अब ये तो बिल्कुल सोचिए कि बहुत छोटी सी बात है। पर उसके अलावा महाकाली को जरूरत है कि जिन लोगों को ये गुरुओं ने भूत लगा दिया है। अब गुरुओं के भूत ऐसे होते हैं कि या तो आप गुरु का कहना मानो और बिल्कुल उनके जैसे हो जाओ। वो कहें तुमसे कि जा कर उनके घर में डाका डालो, तो डाका डालो। उसको मार डालो, तो उसको मार डालो। ये करो, तो वो करो। एकदम गुरु की हाथ में आप शीष नवा करके घूमो तो ठीक है नहीं तो गुरु लग जाएगा आपके पीछे। आपसे कहा किसी को मारो। उसको नहीं मार सके तो दूसरे से कहेगा। इसी को मार डालो। एक अच्छी बात भी है। ऐसे झूठे गुरु एक तरह से अपना और अपने शिष्यों का ही नाश करते रहे लेकिन यहाँ देखती हूँ कि नाश हो रहा है तो भी उन्हीं के चरणों में चले जा रहे हैं! हमारे यहाँ एक साहब पुलिस के साथ आए। मैं शायद अशोका होटल में थी। तो मेरे पति ने कहा, ये क्या झगड़ा है? पुलिस काहे आई? मैंने कहा पता नहीं, देखो तो सही। तो

उन्होंने कहा ये महाशय जो हैं, इनका नाम मैं नहीं बताऊँगी, ये डाक्टर साहब हैं और ये भागे हुए हैं आनंदमार्ग से। तो कहने लगे आपको आश्चर्य होगा माँ, ये आनंदमार्ग के बड़े भारी प्रचारक थे। दुनिया भर में घूमे, खूब पैसा कमाया और फिर इनके गुरु जो थे वो इनको अपना आद्य शिष्य मानते थे। तो हुआ क्या? ये कलकत्ते में देवी के मन्दिर में थे। जहाँ बकरा काटा जाता है। ये बात तो सही नहीं। वो बकरा इसलिए काटते हैं देवी के सामने, कि उसके अंदर भूत डाल कर के, और जो भूतग्रस्त हैं उसका भूत इसमें डाल कर के उसको उस भूत से छुटकारा हो। हम लोग तो नीबू पर ही उतार देते हैं। शाकाहारी (Vegetarian) अपना तो सब मामला। क्योंकि बहुत से बनिए आ गए हैं न सहजयोग में। सो नीबू को काट करके निकल जाता है, भाग जाता है। तो ये जो भूतग्रस्त लोग हैं उनके भूतों को महाकाली दिखाई देती है। वही रूप दिखाई देता है और थर-थर-थर-थर काँपते हैं। ऐसे और कोई कहेगा? अब ये क्यों थर-थर काँप रहे हैं? और अनेक तरह के भूत लग जाते हैं और आश्चर्य मुझे लगता है कि अहं (Ego) का अगर भूत लग गया तो उसको भी महाकाली का रूप दिखाई देता है।

और पूना का किस्सा। पूना में एक प्रोग्राम हो रहा था तो उन्होंने कहा कि माताजी तो ब्राह्मण नहीं हैं, तो हमारे यहाँ पर प्रोग्राम नहीं हो सकता। जो ब्राह्मण होगा वो ही आए। तो वहाँ के जो कार्यकर्ता थे उन्होंने कहा, अच्छा ठीक है, हम पेपर में दे देते हैं कि माता जी ब्राह्मण नहीं हैं, यहाँ प्रोग्राम नहीं हो रहा। दूसरी जगह प्रोग्राम



करते हैं। ना-ना, ना-ना ऐसा नहीं करो। ये हमको नहीं दिखाना है, यहीं करते हैं प्रोग्राम। मुझे किसी ने कुछ बताया नहीं तो मैंने कहा अच्छा आप लोग, पता नहीं कैसे ये दिमाग में आया? आप में से जो कोई ब्राह्मण है मेरी ओर हाथ करे दोनों ऐसे, अब उनके लगे हाथ हिलने! अरे माँ बंद करो बंद करो माँ। आप शक्ति हों, छोड़ो। तुम लोग क्यों हिल रहे हो? मैंने तो नहीं कहा, अपने आप ही हिले जा रहे हो! मैंने कहा था तुमसे हिलने को। मुझे क्यों कह रहे हो? तुम्हीं रोको? रुकता हूँ नहीं, करें क्या? तो मैंने कहा मैंने तो नहीं कहा। पर पता नहीं क्यों बड़ा भय लग रहा है, पता नहीं क्या हो रहा है? अब उनको ये घमण्ड था कि वो बड़े ब्राह्मण हैं। तो कहने लगे माँ उधर भी कुछ ब्राह्मण बैठे हुए हैं उनके भी हाथ हिल रहे हैं। मैंने कहा झूठ, जरा उनसे पूछो वो लोग कौन हैं। ब्राह्मण हैं? अरे नहीं बाबा हम लोग ब्राह्मण नहीं हैं। हम लोग प्रमाणित (Certified) पागल हैं, थाना से आए हैं। वहाँ पर आपको माताजी के पास जा कर एक पागल ठीक हो गया था। इसलिए हम आए हैं। हम लोग ब्राह्मण नहीं हैं। अब उनके आँखें खुली। मैंने कहा समझ गए आप। वो भी पागल और आप भी पागल। दोनों ही पागल। तब उनके हाथ छूटे। शुरुआत में तो बहुत ज्यादा महाकाली का प्रताप है। कुछ समझ ही में नहीं आता था कि ये महाकाली जी अपना प्रताप कुछ कम करें तो मैं दूसरे भी काम करूँ। पूना में तो ये हाल हो गया कि मेरी एक भतीजी (Neice) है उसे मैंने कहा कि एक हँडिया ले आओ। तो बाजार में गई, तो एक रुपये की हँडी 10 रु. में बिक

रही, तो उसने कहा कि इतनी महँगी कैसे हो गई? एक रु. की 10 रु. में! उसने कहा कि एक माता जी आई हैं वो हँडिया, हँडियों पे हँडियां, सब बिक गई। ये सब लोग हँडियां लिए चल पड़े।

मैंने कहा पूना में इतने भूत, बाप रे! कुछ समझ में ही नहीं आया। मैंने कहा हँडिया ले के आओ, नीबू ले के आओ तो बैठें। पर वो नहीं लाए, उनकी आँखें लगी घूमने, वो लगे घूमने। मैं तो उठ के चली गई कि तो सारा यहाँ भूतों का जमघट है। जो लोग हँडिया ले के बैठे थे वो तो कुछ ठीक थे पर बाकी के जो थे वो खड़े हो कर के हो हो, हा हा, ही ही करने लगे। तो मैंने कहा कि भई ये गर महाकाली की शक्ति कुछ कम हो जाए तो अच्छी बात है। अब ये एक चीज ठीक करने के बाद दूसरे आ गए। माने कौन जिसको आप साइको-सोमैटिक कहते जैसे कैंसर, मस्कुलर, ये वो दुनिया भर की बीमारियाँ जिसको डाक्टर लोग नहीं ठीक कर सकते। अच्छा मानेंगे नहीं, डॉक्टर मानते नहीं जब तक रोगी मर नहीं जाएगा। खींचो पैसे। एक साहब को गुर्दा रोग (Kidney trouble) हो गया तो मैंने कहा मैं आपकी किडनी ठीक कर दूँगी। एक शर्त ये है कि आप अपना धंधा बंद करिये कि जो लोगों को ये जो आप टेबलों पे चढ़ा-चढ़ा के सारा पैसा खींचते हो उससे वो ठीक नहीं होता। मरने से पहले Bankrupt हो जाता है। Dialysis बंद आप करो तो मैं तैयार हूँ। हाँ-हाँ माँ आप मेरी किडनी ठीक कर दो। ठीक कर दी पर दो महीने बाद फिर चालू उनकी दुकान। डाक्टर लोग कब सच बोलते हैं और कब झूठ बोलते

हैं? भगवान जाने। फिर उनको Kidney Trouble हो गई। वो मैंने कहा साहब इस बार क्या हुआ? कहने लगे फिर से Kidney Trouble है। मैंने कहा वो नहीं है अब Cancer चल पड़ा है। अब घबड़ा गए। मैंने कहा मैंने आपसे कहा था। आपने फिर से चालू कर दी अपनी दुकान। अब माँ मैं पेट कैसे भरूँगा? मैंने इतने रुपये की मशीनरी मँगवाई है, ये कर रहा हूँ, वो कर रहा हूँ। मैंने कहा बेच डालो मशीनरी को खत्म करो। सुना है वो अब हैं नहीं महाराज सहजयोग में। तो सारी जितनी left side की बीमारियाँ हैं, जितनी हैं साइको-सोमैटिक Disease जिसका कोई Cure नहीं है वो सब महालक्ष्मी की कृपा से ही ठीक हो सकती हैं। इसीलिए महालक्ष्मी का ही मंत्र कहना पड़ेगा और महालक्ष्मी को जब तक आप प्रकट नहीं करियेगा ये बीमारियाँ ठीक नहीं हो सकती। और इतनी गर्मी इन लोगों से निकलती है कि समझ में नहीं आता!

London में जबकि सब लोग हीटर लगाते हैं आप एक कैंसर Patient को ले आइये और उसकी कुण्डलिनी जागृत कर दीजिए। हीटर का खर्चा गया। इतनी गर्मी निकलती है। जिसकी कोई हद नहीं। इधर गर्मी निकलती है उधर वो रोते रहते हैं अक्सर, क्योंकि इसके साथ रोना चलता है। महालक्ष्मी के दर्शन हों तो रोना रुके। माँ सरस्वती के दर्शन तो दूर ही रहे, ये तो माँ काली के ही दर्शन होंगे। अब उनको देखकर रोना ही आएगा। अब उनसे कहें क्या? सूक्ष्म रूप से आप देखिये कि महालक्ष्मी का जो स्वरूप है। अति रौद्र। देवी के उसमें कहते हैं अतिरौद्रा अतिसौम्या पर महालक्ष्मी अतिरौद्रा। रुद्र

स्वरूप और वो रुद्र बहुत जरूरी है नहीं तो ये Negativity भागने वाली नहीं है। ये सिर्फ रुद्र स्वरूप से ही। एकादश रुद्र में जो 11 रुद्र हैं वो ग्यारह ही रुद्र में महाकाली की ही शक्ति विराजमान है। और वो हमारे मेधा पर यहाँ ग्यारह चक्रों में समाई हुई हैं। गर किसी आदमी का एकादश पकड़ गया तो सोच लीजिए उसको तो कैंसर या कोई न कोई left sided भयंकर incurable Disease हो गई है।

सहजयोग का Science जो है वो पूरी तरह से उत्तम है। उसमें कोई आप दोष नहीं निकाल सकते। अब लोग आए कैंसर लेकर, Neurosis, फलाना डिकाना, पचास तरह के, एड्स, और कहने लगे कि माँ हम तो कभी किसी गुरु के पास गए नहीं। अरे भई गुरु के पास गए नहीं, तुम्हारी माँ गई होगी। तुम्हारे बाप गए होंगे। नहीं वो भी नहीं हुआ। हाँ रजनीश की किताबें पढ़ी थीं और सत्य साई बाबा का फोटो हमारे घर में है। और एक दो देख लो मैंने कहा। दो चार और बीमारियाँ आ जाएंगी। फिर आना। वहाँ जाएँगे। बीमारियाँ पकड़ेंगे और यहाँ आएँगे। तो उन पर तो रुद्र स्वरूप ही देवी का दिखना चाहिए ना। क्या भूतों से कहा जाए कि आ बैठ-बैठ, तू खाना खा, ले पान। बहुत से लोग पूछते हैं कि माँ देवी का रुद्र स्वरूप कैसे हो सकता है? गर वो माँ है तो माँ का स्वरूप रुद्र कैसे हो सकता है? क्यों नहीं। बच्चों को ठीक करने के लिए रुद्र स्वरूप भी धारण किया। सौम्य स्वरूप, ये बच्चों के लिए हानिकार जाना जा सकता है

उनका रुद्र स्वरूप बहुत जरूरी है। उसके



सिवाय वो ठीक ही नहीं हो सकते। परन्तु रुद्र स्वरूप में किसी को हानि नहीं पहुँचाई। ये विशेष बात है। जैसे कि पहले महाकाली ने इसको मारा, उसको मारा, इसकी जीभ खींची, ये किया, ऐसा कुछ नहीं। आज का जो महाकाली का स्वरूप है वो है रुद्र। इसको कोई जरूरत ही नहीं, ये सब करने की। मनुष्य ऐसे ही घबड़ा कर के ठीक हो जाता है। उस स्वरूप को देखते ही ठीक हो जाता है और जब वो उस स्वरूप को देखता है अपने आप उसकी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं क्योंकि उसके अंदर जो Negative चीज है वो भाग जाती है। तो किसी को गर्दन काटने की या जीभ काटने की या आँख निकालने की कोई जरूरत नहीं है। माँ काली का स्वरूप गर इस्तेमाल ही न किया जाए तो सहजयोग का कार्य ही न हो सके क्योंकि Negative forces के कारण सारे चक्र पकड़े जाते हैं और चक्र ठीक किए बगैर कुण्डलिनी चढ़ेगी नहीं। इसलिए माँ काली का स्वरूप बहुत वंदनीय है, बहुत सराहनीय है जो कि किसी को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाती। सिर्फ उसके स्वरूप से जो बुरी बातें हैं वो भाग जाती हैं।

अब मियाँ-बीबी के झगड़े ये सबसे बड़ा प्रॉब्लम है। आजकल क्योंकि बीबियाँ पढ़ गईं और मियाँ चाहते हैं कि बीबी बिल्कुल देहाती हो। अब वो देहाती तो हैं नहीं, उसको देहाती कैसे बनाएँगे? एक बार शहरी हो गए, तो शहरी हो गए। चाहे आप लैहंगा पहन लीजिए और चाहे तो आप पैट पहन लीजिए। दिमाग तो शहरी हो गए। अब जो शहरी दिमाग हो गए तो उसके बाद

जो स्त्रीत्व था वो तो कम हो ही जाता है। पुरुषत्व ज्यादा आ जाता है। स्त्रीत्व कम आ जाता है। और स्त्री का जो सबसे बड़ा गुण है शालीनता वो खत्म हो जाता है।

वो शालीनता जो स्त्री का स्वरूप है उसको रणांगन में जाने की जरूरत नहीं है। पद्मिनी ने अपने को 3000 औरतों के साथ चित्तौड़गढ़ के किले पर ही जला लिया था। वो कोई तलवार लेकर बाहर नहीं गई। पर जब जरूरत पड़ी तो झाँसी की रानी हाथ में तलवार ले कर खड़ी हो गई! तब मुझे याद है अंग्रेज ने कहा था कि हमारी तो विजय है लेकिन गौरव तो झाँसी की रानी का है। अपने देश में अनेक तरह की उज्ज्वल चरित्र वाली औरतें हुई हैं। पति परायण, स्त्री धर्म में अत्यंत उच्च ऐसी औरतें हो गई हैं जिन्होंने अपनी सूझबूझ से अपना घर संभाला। जब गाँधी जी ने ललकारा तो औरतों ने अपनी चूड़ियाँ व सब जेवर निकाल दिए। राणा प्रताप का ही किस्सा है कि राणा प्रताप ने देखा कि उसकी लड़की की घास की बनाई हुई रोटी भी एक बिलाव उठा कर ले गया, तो उनके मन में ये शंका हुई कि मैं क्यों ऐसा कर रहा हूँ, अपने अहंकार के लिए? मैं अकबर की शरण क्यों नहीं जाता? तो वो चिट्ठी लिखने बैठे अकबर को। उस वक्त क्षत्राणी, उनकी पत्नी की शक्ति जागृत हुई। हाथ में भाला ले कर उसने अपनी लड़की पर लगाया और कहा कि मैं तुझे मार डालती हूँ जिससे ये जो कमजोरी इनके अंदर आई है। तब राणा प्रताप की आँखें खुली।

हमारे यहाँ औरतों ने गर सोचना ही है तो पिछली बात सोचें कि रणांगन में अपने पतियों



को ठीका लगा कर वो लड़ने भेजती थीं।

इन अंग्रेजों से कौन लड़े आदमी? पर शक्ति औरतों की है। क्योंकि आजकल औरतें अशक्त हो गईं और आदमी भी निःशक्त हो गए। ये शक्ति जो है ये स्त्री की शालीनता है। और जब तक ये शालीनता क्रियान्वित नहीं होती तो गृहलक्ष्मी की शक्ति उसके अंदर प्रकटित ही नहीं होती। लेकिन चतुर होना चाहिए। गृहलक्ष्मी को चतुर होना चाहिए और दूसरे उसमें सूझबूझ होनी चाहिए। सो ये कहें कि जब महाकाली शक्ति अत्यंत शांत हो जाती है तो वो गृहलक्ष्मी हो जाती है। महाकाली शक्ति। तो हम फातिमा बी को मानते हैं कि वो गृहलक्ष्मी का सिंहासन सुशोभित करें। महाकाली को इस शक्ति से स्त्री अपने बच्चे को ठीक रास्ते पर रखती है। अपने चरित्र को उज्ज्वल रखती है और हम लोग इस चीज के साक्षी हैं कि एक पतिव्रता स्त्री के पतिव्रत को कोई नष्ट नहीं कर सकता क्योंकि ये शक्ति है। ये महाकाली की शक्ति है, लोग डरते हैं एक पतिव्रता स्त्री से। और पतियों को भी जान लेना चाहिए कि उनके अंदर जो कार्य शक्ति है वो भी स्त्री से ही आती है। और वो शक्ति गर स्त्री से आती है तो स्त्री में पहली चीज शालीनता है या नहीं। गर स्त्री जबरदस्त है, इधर बैठ, उधर बैठ, ये चल, वो कर, जो ऐसे अँगुली दिखाना शुरू कर दी तो, वो चुप। पति का अधिकार है। लेकिन शालीनता से आप जीत सकते हैं। उसमें चतुरता चाहिए। ये शालीनता के लिए कोई किसी को मार-पीट चिल्लाना, कुछ नहीं। एक तो शालीन स्त्री में हास्यरस बहुत प्रस्फुटित होना चाहिए। किसी भी चीज को वो

हँसी में डाल दे और हँस कर के हजारों प्रश्न को हल कर दे। ये जो बारीकी होती है इसको समझने के लिए मैंने कहा था आप शरदचन्द्र पढ़िए। उसमें सबकी नॉक-झोंक औरतें कैसे संभालें? ये होशियारी की बातें हैं। हम लोगों को Politics में जाने की जरूरत नहीं, और इस गंदे Economics में तो जाने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं। लेकिन समाज की सारी धुरी, समाज का सारा कार्य स्त्री पर निर्भर है।

जो स्त्री अपने बच्चों को अच्छा बनाती है, अपने घर को अच्छा बनाती है, अपने पति को स्वास्थ्य देती है वो स्त्री एक बहुत बलिष्ठ समय बनाती है। और कल मैंने कहा भी कि हमारे हिन्दुस्तान की औरतों की वजह से ही आज हमारा समाज ठीक है। पर स्त्री का स्वभाव शालीन होना चाहिए और उनकी शक्ति भी शालीनता में है। उद्यमता में नहीं है। उसको दंड ठोकने की जरूरत नहीं है। बिल्कुल नहीं। उसको जो शालीनता है उस शक्ति पर वो सारी दुनिया को जीत ले। उसकी चाल-ढाल, उसका ढंग एक देवी स्वरूप होना चाहिए। वो महाकाली शक्ति है। वो अनेक चीजों में बैठती है। उसके अपने-अपने वाहन हैं लेकिन वो जब हाथों पर बैठती है तो उसे ललिता गौरी कहते हैं। कला, हावभाव उसके सब बहुत इज्जतदार सुन्दर होते हैं। जरूरी नहीं कि आप घूँघट लें, जरूरी नहीं कि आप सर ढकें, लेकिन आँखों में शालीनता होनी चाहिए। शालीन बहुत बड़ा शब्द है इसमें बहुत सी चीजें समाई हुई हैं। क्योंकि वो रुद्र स्वरूप है उस रुद्र स्वरूप को बहुत सौम्य स्वरूप होना है। इसीलिए कहा

है कि आप घूँघट ले लो, सर ढक लो। बुर्का ले लो क्योंकि आप महाकाली हैं। जो आपको देख ले वो ही भस्म हो जाए। जो बुरी निगाह से आपको देखे वो ही खत्म हो जाए। आपके सुरक्षण के लिए नहीं, Protection के लिए नहीं लेकिन जो दूसरे के लिए नहीं लेकिन जो आपके ऊपर बुरी निगाह डाले वो भस्म हो जाए नष्ट हो जाए। वो भस्म हो जाए। ऐसी ही ये महाकाली की महान शक्ति है। देखने में तो बहुत ही उज्ज्वल बहुत ही शालीन पर अंदर से, उसकी शक्ति तो अंदर से क्रियान्वित होती है। तो महाकाली को लोग कहते हैं कि ये एक बड़ी रुद्र शक्ति है माँ किन्तु इसकी शालीनता आप देखें तो आश्चर्य होता है कि क्या ये महामाया हैं? तो ये महाकाली और इतनी शालीन जैसे नववधु, वाह वाह। ऐसी शर्मावगी, ऐसे मोटे बोल बोलेगी जैसे फूल झड़ रहे हों! ऐसे प्यार करेगी कि विश्वास ही नहीं होता। लेकिन ये महाकाली की शक्ति है। इसको जिसने पा लिया उसको कोई न तो भूत छू सकता है। उसका कौन छुएगा, वो ही भूत को पकड़ेगा। और जो स्त्री ऐसी होती है उसके एक नज़र से वो लोगों को भस्म कर सकती है।

अब दूसरी शक्ति है महासरस्वती की जिससे की हमें बुद्धि में अनेक तरह के कलात्मक और अनेक तरह के विचारक प्रकाश आते हैं। सरस्वती की कृपा से। शारदा...शारदा की कृपा से हमारे अंदर अनेक विचार बड़े सुन्दर, बड़े शांत, बहुत शीतल, बहुत कविताएँ आती हैं पर रोने गाने वाली नहीं, ऐसी आती हैं कि जिससे आप जागरूक हों। बड़े-बड़े राष्ट्रीय गीत लिखे

गए। देश के चारों में न जाने लोगों ने क्या-क्या लिखा? अब वो सब कविताएँ चली गई और ये सब गंदे फिल्मी गाने बजते रहते हैं। और गणेश जी के सामने क्योंकि सुबुद्धि ही नहीं है मुनध्य में। सुबुद्धि नहीं है। वो बेकार के काम करते रहता है। बुद्धि से कुछ भी निकाल ले। इसमें सबसे बढ़ कर गर कोई है तो मैं कहूँगी ये फ्रायड। इससे बढ़ कर कोई औलिया मैंने देखा नहीं। निस्संकोच उन्होंने अपने विचार सबके सामने रख दिए और सबने उसे मान लिया। अब मैं यहाँ नहीं आपको बताऊँगी क्योंकि यहाँ बताने लायक हैं नहीं उसके गंदे-गंदे विचार। वो तो अच्छा है हिन्दुस्तान में नहीं आए नहीं तो सब उसको काट कर फेंक देंगे। और उस आदमी का लिखा, एक line आप पढ़िए तो आप जान जायेंगे कि ये बड़ा ही बेशर्म आदमी है या भूत है या राक्षस है। जो भी है, ये उसने अपनी लेखनी का और बुद्धि का उपयोग किया है।

शारदा के विरोध में सब लिखा और लिख दिया उन्होंने। अब सब जगह शुरू हो गई कि हममें तो साहब भक्ति है। हम चाहे जो लिखें। आजकल के अखबार वाले भी वैसे ही हैं। उनके भी ऊट पटाँग जो समझ में आती है बात वो लिखते रहते हैं, और कोई अच्छी बात तो लिखना ही नहीं जानते। कौन मर गया, कितने मर गए? अभी मर रहा है, वो रोज देंगे। मर रहा है तो भई मर जाने दो फिर लिखो। भई काहे को रोज-रोज सबको सताते हो। वो मरता ही नहीं है, रोज इतना सारा लिख देंगे। मरा नहीं, अभी मरता नहीं। एक बार मरने के बाद इत्मीनान से लिखो। मरने तो वाले हैं ही। अब क्यों रोज-रोज ये सब



वातें। किसने पूछा है आपसे? फिर लिखेंगे, महाझूठ बोलते हैं ये लोग। डर नहीं उन्हें शारदा देवी का। शारदा देवी तो हैं सत्य को देने वाली और सत्य की अधिष्ठात्री हैं। जो अपने सर में सत्य का प्रकाश आता है वो शारदा का ही है। आप जब लिखते हैं तो आप सोच नहीं रहे कि आपके अंदर ये लेखन शक्ति कहाँ से आई। ये किसने आपको लेखन शक्ति दी है? शारदा देवी ने या किसी भूतनी ने आपको दी है? इसी प्रकार मैंने देखा है। बहुतों ने ऊट-पटाँग कुण्डलिनी के बारे में बातें लिखी हैं। एक अरबिन्दो साहब हैं, वो तो बस पता नहीं कहाँ से कहाँ, कहाँ से कहाँ, कहाँ से कहाँ चले गए! कुछ उसमें अर्थ ही नहीं है, वो क्या लिखते हैं पता नहीं। उनका बड़ा नाम है अरबिन्दो मार्ग। मैं हमेशा उस मार्ग से नहीं जाती क्योंकि पता नहीं कहाँ चला जाए? जहाँ उसकी खोपड़ी गई वही लिखता गया, लिखता गया, लिखता गया। और कुछ भी उसमें की बात सत्य नहीं। अब वो सावित्री की गाथा गाई उन्होंने, अब सावित्री का ये अरे क्या करने का है। और उनकी वो जो भी उनका रिश्ता रहा हो, पता नहीं वो जो माता जी थीं वो पचासों तो उनके मुँह पर शिकनें पड़ी हुई हैं और कहें ये जवान होने वाली है। वो मर गई, गाड़ दिया तो भी अभी जवान तो हुई नहीं। और उनकी किताबों पे किताबें। ऊट-पटाँग ऐसे। ऐसे धर्म के न जाने कितने लोग हैं। फिर आज के intellectuals निकल आए हैं दूसरे हाल में। मैंने पढ़ा एक साहब हैं अपने को बड़े भारी लेखक समझते हैं। नाम मैं भूल गई। पंजाबी हैं पंजाबी। कभी उन्होंने संस्कृत पढ़ा नहीं होगा और लिखते

क्या है कि कृष्ण जो थे ये शूद्र धर्म के थे या अशूद्र थे, काले थे और राम जो थे वो ब्राह्मण धर्म के थे। अरे मैंने कहा काहे.....और इसलिए इनको शूद्र मानते हैं और उनको ब्राह्मण मानते हैं। मैंने कहा अच्छा! ये कौन से शास्त्र में से आपने पढ़ा? सच बात तो बताऊँ कि जवाहर लाल जी ने भी जो किताब लिखी है वो Discovery किसी और चीज को होगी। India की Discovery नहीं।

इतनी superficial इतनी ओछी किताब! ये हिन्दुस्तान की बात लिख रहे हैं। कोई गहराई नहीं उनमें। जो देखो वो किसी पे भी लिखना शुरू कर देता है! अभी तक मैंने कुछ नहीं लिखा।

मैं सोचती हूँ सबकी खोपड़ी में जाए ऐसी बात लिखो। अभी तो सबकी खोपड़ियाँ इतनी खुली नहीं हैं। और किसी ने भी नहीं लिखा। हाँ मोहम्मद साहब ने तो कुछ भी नहीं लिखा। उनको तो लिखना ही पढ़ना नहीं आता था बेंचारों को। चालीस आदमियों से उन्होंने बताया कि भई ये मुझको मालूम हुआ। Revelation हुआ ये ऐसे-ऐसे हैं। उनको भी लिखना पढ़ना नहीं आता था। तो चालीस साल तक कुछ लिखा नहीं गया। एक बड़ा दुष्ट आदमी था। उसका नाम था...कुछ ऐसा ही नाम था। ये मेरे पिता ने मुझे बात बताई और अब ये पक्का है ये पता है ये सच है। उस महाशय ने बड़ा दुष्ट था। हजरत अली को मारा उसके लड़के को मारा। उसके बाद खलीफा को मारा फिर दूसरे खलीफा को मारा और उसका ज़िगर उसकी माँ खा गई। ऐसा ये गंदा आदमी। औरतों का वो.....था। उसने कुरान को Edit

किया। अब बताईये और कुरान-कुरान लिए घूमते हैं! इसकी authenticity कुछ है नहीं और बाइबल में भी Paul ने सारा सत्यानाश कर दिया। ये तो ईसाई कम से कम मानते हैं। वो नाम भर के ईसाई हैं। चलो अच्छा है क्योंकि ऐसी-ऐसी बातें किसी से कहो तो मारने को दीदेंगे। जिस कुरान के लिए लड़ते हैं उसका ये इतिहास है, ये सच्ची बात है। उसमें शारदा देवी का क्या हाथ? शारदा देवी की कृपा से बहुतों ने बहुत कुछ लिखा। ज्ञानेश्वर जी ने ज्ञानेश्वरी लिखी और उसके बाद एक और किताब। इतनी सुन्दर है कि ऐसा लगता है कि आप अमृत पी रहे हैं। संतों ने लिखा जिन पर शारदा देवी की कृपा हुई। ज्ञानेश्वरी की शुरुआत में शारदा देवी की कृपा से वो लिखते हैं कि मेरे वचन जो भी मैं कह रहा हूँ ये मैं शारदा देवी को प्रसन्न करने के लिए कह रहा हूँ लेकिन ये शब्द किसी भी तरह से आपको दुःख नहीं पहुँचाएंगे। जिस तरह से पंखुड़ियाँ धीरे से आ कर ज़मीन पर गिर जाती हैं उसी तरह मेरे शब्द भी आपके हृदय पर गिरें और आपको सुगन्धित करें। क्या लिखना। इतनी सुन्दर कविता और इतना सौम्य उसका स्वरूप! ऐसे लगता है कि जैसे आप अमृत का रस पी रहे हों! अब इसलिए कि मैं मराठी भाषा जानती हूँ, पर अंग्रेजी में भी कई बड़े कवि हो गए और उनकी कविताएँ हम लोगों ने विज्ञान नाम की किताब में दी हुई हैं आप पढ़िए। उनका नाम था विलियम ब्लेक। और इतनी जोशीली कविता कि आप के अंदर जोश आ जाए। शारदा जैसे उनकी कविताओं में से निकल कर आपके अंदर बस गई हों। वैसे ही शरद-चन्द्र,

गर आप पढ़िए तो आप कहानी लिखना शुरू कर देंगे। ऐसे-ऐसे लेखक अपने यहाँ हो गए इस भारत वर्ष में कि ऐसे कहीं नहीं हुए होंगे। टालस्टाय हो गए बहुत बड़े, मैं मानती हूँ पर उनसे भी बड़ कर शरतचन्द्र। महाराष्ट्र में तो बहुत ही ज्यादा। एक... उनके नाम बताने से फायदा नहीं। लेकिन किसी ने उनको translate ही नहीं किया क्योंकि ये सब मामला Political है भई। ये Political क्या है। शारदा देवी कोई Political हैं। ये Political मामला है कि आपके Chief Minister साहब गर कहें तो Academy बनेगी।

हमारे Chief Minister साहब महाराष्ट्र के, वो तो अंग्रेजी भी बोलना नहीं जानते, मराठी भी नहीं जानते वो क्या करेंगे? अनपढ़ आदमी जैसे हैं। सब अनपढ़ ही होते हैं आजकल तो Chief Minister? वो क्या recommend करेंगे? उनको क्या मालूम? Recommend करने के लिए कोई पढ़ा लिखा आदमी हो। उनको कोई जानने वाला हो, बना दिया recommend करने के लिए। हरेक चीज़ को वो ही recommend करते हैं। नहीं तो ऐसी-ऐसी सुन्दर चीज़ें।

दक्षिण में कोई उत्तर के एक कवि है। उनकी कविताएँ इतनी सुन्दर कि मैं आपसे क्या बताऊँ। शारदा देवी की अत्यंत कृपा अपने देश पर है। सबसे बढ़िया लेखक अपने देश में हैं। ये westernised नहीं बल्कि असली हिन्दुस्तानी भारतीय लोग हैं। उनमें पैसा नहीं है पर सरस्वती की बड़ी कृपा है। एक से एक। अब राजस्थान पर उस की बड़ी कृपा रही। यहाँ बड़े-बड़े कवि हो गए और यहाँ से Alexander भी यहाँ की



संस्कृति देख कर इतने अचंभे में पड़ गए! तो वापस गए और अपने साथ चंद्रवर्दाई को ले गए। एक बड़े भारी कवि हैं चंद्रवर्दाई। यहाँ के हैं राजस्थान के हैं। उनको अपने साथ ले गए और राजस्थानी language में उनका बड़ा वर्णन किया। फिर सूफियों में खुसरों हैं, क्या कविताएँ हैं! कबीर दास हैं। गुरु नानक साहब का तो कहना ही क्या, वो तो गुरु हैं। रामदास स्वामी। बंगाल में भी क्या एक से एक कवि हो गए। और ये सब शारदा देवी की कृपा से हैं। सारे शब्दों से मानो धर्म बहता हो। प्रकाश और सारे ही शब्द इनके व्यवस्थित। ऐसा लगता है मानो निर्विचारिता में लिखे गए हों। इतने शुद्ध वर्णन। ये हम जरूर कहेंगे कि सबसे ज्यादा संस्कृत में और उसके बाद मराठी में ही आध्यात्म पे किताबें बढ़िया लिखीं। ना जाने बड़ी गहराई से, आध्यात्म पे काम किया गया। अब कोई कहे कि अंग्रेजी में भी इतना लिखा जाता है माँ तो वहाँ क्या शारदा का कोई वो नहीं? अब यही सोचिए कि अंग्रेजी भाषा में आत्मा के लिए spirit शब्द है, है ना? शराब को भी spirit और भूत को भी spirit। ये कोई भाषा हुई? ये शारदा देवी की कृपा से ऐसी भाषा नहीं। और फ्रेंच भाषा तो उससे भी गई बीती। एक दम। उसमें चेतना के लिए कोई शब्द नहीं। अंग्रेजी में कम से कम awareness, उसमें awareness के लिए कोई शब्द नहीं। और उसमें आत्मा के लिए जितने दारू के लिए शब्द हैं वो लगा दीजिए आत्मा के साथ।

ये सब उन पर आशीर्वाद हुआ। वे बड़े-बड़े लेखक हो गए, सब जो भी लेखक वहाँ हुए हैं राजकारणी लोग, राजकरण पर लिख गए। हाँ

एक विलियम ब्लेक की हम बात कहेंगे वो भी इसलिए। लेकिन बाकी। एक साहब हैं उन्होंने कविता लिखी। मार रोने की कविता। जैसे अपने यहाँ गजलें होती हैं वैसे रोने की कविता उन्होंने लिखी। कि अच्छे भले घर में बैठे खाते-पीते आदमी हैं पर नाटक बना कर कविता लिखी कि मैं कहीं पे जा कर कैद हो गया। क्यों हुए, कुछ नहीं होते तो पता चलता और कैद में ये हुआ और मेरे बाल सफेद इसलिए नहीं हुए और फलाना नहीं हुआ और ढिकाना नहीं हुआ। ऐसे-ऐसे अरे भाई ऐसा अगर तुम्हें तकलीफ हो रही थी तो तुम कहीं वहाँ डूब जाते। अच्छा रहता। ऐसी रोने वाली कविता! जो कविता उठाओ वो रोने वाली। और अच्छे भले बैठे हैं। मतलब उनको कोई तकलीफ होने पर लिखो तो भी समझ में आता है। अच्छे भले बैठे हैं पैसा कमा रहे हैं। सबको रुला रहे हैं और आप पैसा खा रहे हैं। और लोगों को भी रोना बड़ा अच्छा लगता है! हमारे एक मुसलमान पहचान में, तो कहने लगे माताजी ये गजल लोग क्यों गाते हैं? मैंने कहा उन्हीं से पूछो जो गाते हैं। मुझे तो पसंद नहीं। कहने लगे जितने लोग गजल पसंद करते हैं वो अपनी बीबी से प्यार नहीं करते, वो कुछ और ही से प्यार करते हैं। मैंने कहा आपने कैसे जाना? मैंने देखा है ये बात है और रोते रहते हैं। अरे अपनी बीबी है क्यों रो रहे हैं, ये बीबी बैठी जिन्दा। उसी के साथ रहो, आराम से मजा उठाओ। अब तीसरे के लिए रो रहे हैं। तू नहीं मिला और तेरी छाया नहीं मिली। ये क्या शारदा देवी के आशीर्वाद में से होती है ऐसी कविताएँ? ये सिर्फ लोगों को मूर्ख बनाने के लिए एक और

तरह के लोग होते हैं। एक साहब हमारे यहाँ आए थे। बहुत दिन पहले की बात है तो उन्होंने शराब पे कुछ सुना दिया। बड़े मशहूर आदमी हैं। शराब से ये होता है, फिर मधुशाला होता है और फलाना होता है। मैंने कहा जो रस्ते में मरते हैं वो भी तो कहां। मैंने फिर उनको एक कविता सुनाई उसी वक्त, मैं तो शीघ्र-कवि हूँ। मैंने कहा क्यों ना प्याला झूमता है, पी वही मदहोश हाला। प्याला क्यों नहीं झूमता, वो क्यों नहीं झूमता? और तुम क्यों झूमते हो। तुम तो प्याले से भी कमजोर हो। इसके बाद उन्होंने शराब की बात नहीं करी। कुछ समझ ही में नहीं आता। जब बीबी मर गई तो उसका सुनाया उन्होंने। उस पर एक कविता बना ली और सुनते हैं कि 15 दिन बाद उन्होंने शादी भी कर ली और फिर उस पर दूसरी कविता बना ली। जैसा मौका लग गया वैसे ही। इस प्रकार अपने देश में बहुत सस्ते टाईप के कवि पैदा हुए और विशेषकर वो कवि जो कि भगवान को सब चीज में घसीटते हैं और परमात्मा को मनुष्य के जैसा दिखाते हैं। ये तो महापाप है और उन पर शारदा देवी की जो भी कृपा है वह महाकाली के दरवाजे में जाने वाली है। माने विद्यापति साहब एक लेखक थे। अब राधा और कृष्ण का पता नहीं साहब क्या श्रृंगार सजा रहे हैं। अरे उस कृष्ण को कहाँ टाइम। उस राधा को कहाँ टाइम कि श्रृंगार करें? सारे विश्व को जिसको चिन्ता और रा-धा रा माने Energy और धा माने धारने वाली। उसको क्या ये सब दुनिया भर का रोमांस करने की जरूरत? अब डाल दिया उन पर रोमांस। यहाँ तक कि बाजिद अली साहब जिनके 165 बीवियाँ थीं वो भी

साड़ी पहन के और राधा बनते थे और कृष्ण के साथ नाचते थे। अब ये रोमांटिकपना जो है, उसमें कोई अर्थ नहीं, बेकार की बात है। साधू संतों को इससे क्या मतलब? वो तो कबीर को भी लोग कहते हैं कि कबीर ने कह दिया कि "सैंया निकस गए मैं न लड़ी थी" अरे वाह, सैंया निकस गए माने क्या कि प्राण निकल गए, खुसरो ने लिखा "छाप, तिलक सब दीन्हीं, तो से नैना मिला के" अरे सूफी आदमी वो किससे नैना मिलाना सिवाय परमात्मा के? छाप माने मुसलमानों की पहचान और तिलक माने हिन्दुओं की, सब मैंने छोड़ दिया, तुझसे जब मैंने आँखें मिलाई। उन्होंने देहाती भाषा में, इस तरह की भाषा में लिखा। ऐसे जैसे "मेरा नैहर छूटो ही जाए", अब तो क्या वो बहुरानी थे के क्या नैहर छोड़ने के। क्योंकि गहराई नहीं है तो सूफियों को भी हम सोचते हैं कि वो Film Star हैं, फिल्मी गाने गा रहे हैं। गहराई नहीं है ना, समझ नहीं। तो शारदा जी भी जो हैं, वो भी कभी-कभी महामाया स्वरूप हो जाती हैं। जैसे zen, zen के जो कवि लिखते हैं वो एक सहजयोगी ही समझ सकता है और कोई नहीं समझ सकता। वो जिस तरह से कोई चीज का वर्णन करते हैं। छोटी सी भी, या जिस तरह के वो चित्र बनाते हैं वह बहुत ही सूक्ष्म और उसकी संवेदना सिर्फ एक योगी जन ही कर सकते हैं और कोई नहीं। अब कव्वाली में लोग मुजरा गाते हैं और मुजरे में कव्वाली। ये कोई शारदा देवी का आशीर्वाद नहीं। किसी भी तरह ऐसे Mixtures करना।

संगीत में भी शुद्धता आनी चाहिए। अब संगीत में भी देखते हैं कि उसमें जापानी भी ले



आते हैं और अंग्रेजी भी ले आते हैं और सब ले आते हैं, क्योंकि शुद्ध संगीत गाना नहीं आता। और मिला-मिला के, मिलाकर करते चलो। देहात में गाते हैं लोग कितने प्रेम से और शारदा देवी के पूर्ण आशीर्वाद से! उनके आशीर्वाद से ही जितने महान ग्रंथ हैं वो बने। कितने महान नाटक या कादम्बरियाँ लिखी गईं वो सब इस शारदा देवी के आशीर्वाद से। किन्तु इस वर्तमान में ऐसा लगता है कि शारदा देवी ने अपना हाथ कुछ रोक लिया है या ये आशीर्वाद कम हो गया है। इस राजस्थान में जो कला का प्रारंभ हुआ है, मैं देखती हूँ कि दो-तीन साल में ही एकदम कला फूट पड़ी है। ये बिल्कुल शारदा देवी का ही आशीर्वाद है इसमें कोई शक नहीं।

ऐसी-ऐसी नक्काशियाँ। ऐसी-ऐसी चीजें बनाने लग गए लोग हाथ से अपने! बड़ा आश्चर्य! पहले भी यहाँ बड़ी अच्छी नक्काशियाँ होती थीं, लोग तराशते थे, पर अब सारे Pottery में देख लीजिए, कहीं देख लीजिए। क्या सुन्दर-सुन्दर कला! बढ़िया ऐसे रंग-विरंगी ऐसी चीजें! हम कल ही एक फैक्टरी देखने गए थे तो हमने सोचा आज ये साड़ी पहनें। ये राजस्थानी रंग हैं सारे। और डरते नहीं। ऐसा रंग हर एक तरह का रंग पहनते हैं। अंग्रेज ऐसे नहीं। वो कहते हैं एक गर हो तो उसके ऊपर बिल्कुल मेल नहीं ना उनके हृदय में और दिमाग में, लगता है, दिमाग में उनके मेल नहीं।

इनको भाषा की समझ तो है नहीं, कुछ भी कह लो। अब जब हृदय और दिमाग एक होगा तब लोग समझेंगे ये चीज क्या है कि जिसे अंग्रेजी में यूँ बदल सकते हैं। मारे खुशी के जो

रंग समाया ये रंग बनके जब फैल जाता है। ये अपने देश में ही होली हो सकती है और किसी में नहीं।

रंगों के हमारे यहाँ जो खेल होता है, रंगों के हमारे यहाँ जो साड़ियाँ बनती हैं, कपड़े बनते हैं, लैहंगे बनते हैं, ये सब उनके देश में कहाँ? वहाँ तो Grey कपड़े पहन कर चलेंगे। अब Grey से बढ़ गए तो काले। ऐसे भूत के जैसी शक्लें और ऊपर से काले कपड़े पहन कर घूमते हैं। एक से उतरे तो दूसरे।

उनकी कोई हिम्मत है ऐसी एक भी साड़ी बना कर दिखा दें तो हम फिर से अंग्रेजों को मान लें। एक, रंग-विरंगे हर तरह औरतों के Dress होते हैं। इस राजस्थान में तो क्या कहें? इतना सुन्दर शारदा देवी ने इन लोगों को यहाँ बसाया है। वैसे एक बात जरूर कहेंगे कि यहाँ सफाई का ख्याल बहुत है। औरतें बहुत साफ हैं। घर वगैरह साफ रखती हैं। पर बाहर बहुत गंद है। आदमी लोगों को कोई मतलब ही नहीं बाहर से। सब कूड़ा बाहर फिंकता है और, परदेस में बाहर साफ है क्योंकि आदमी लोग खुद साफ करते हैं। यहाँ आदमी लोग हाथ में झाड़ू लेकर साफ करेंगे। अरे बाप रे, उनके तो सर का ताज उतर जाएगा। तो सफाई और व्यवस्थितता, ये भी शारदा देवी का ही आशीर्वाद है। औरतें तो अपना घर वगैरह बहुत सुन्दर साफ सजा के रखती हैं। देखते हैं हम पर आँगन से बाहर हुए कि आदमियों के सब वहाँ वहाँ सब नज़र आते हैं। गर ऐसी प्रथा हम सीख लें अंग्रेजों से कि वो सब आदमी मिल करके सन्डे के रोज उसका जलसा मनाते हैं। सब लोग आपस में बाहर

निकल कर और सब लोग मिलकर जलसा करें, चलो आज सफाई करेंगे, गार्डन ठीक करेंगे। ये करेंगे, वो करेंगे। पर हमारे यहाँ नौकर चाकर हैं। हम क्यों करें। नौकरों से करवाएँ। ये गंदगी जो है ये शारदा देवी को पास में नहीं आने देती है। वो हट ही गई। बहुत जरूरी है कि सफाई करनी चाहिए और सफाई भी सुचारू रूप से Artistic होनी चाहिए। यहाँ तो बहुत ही कला का प्रारंभ है। और ये कोई सोच भी नहीं सकता और ऐसी चीज़ कहीं और बन ही नहीं सकती, जो आपने बना कर रख दी। असंभव लेकिन है। कला है आपके पास। सब कुछ है पर इसे मंडप तक पूजा तक और उसके बाद तो सीमा में आप बाँध नहीं सकते शारदा देवी को। वो असौम है। और उनकी कृपा असौम तक चलती है। आप कहें कि बस हम शारदा देवी के पुजारी हैं तो आपके घर तक तो ऐसी बात नहीं। वैसे बहुत ही कला पूर्ण यहाँ के लोग हैं। बहुत सुन्दर। इतने सुन्दर घर आपको मेरे ख्याल से हिन्दुस्तान में कहीं नहीं मिलेंगे। उसका कारण है यहाँ की पृथ्वी से ये बढ़िया पत्थर निकले। ये एक से एक और उसका आपने इस्तेमाल किया और पत्थर है और इसके अलावा और भी यहाँ बड़ी कलात्मक चीज़ें हैं। इतनी कलात्मक चीज़ें इस धरती ने आपको दीं। ये भी शारदा जी की ही कृपा से कि आपके अंदर ये शक्ति आई कि इन पत्थरों को आप तराशें और उसका सदुपयोग करें। जैसे कि टर्की में बड़ी गरीबी आ गई और बड़े कलात्मक लोग। कुछ मेरी अक्ल में नहीं आया कि इतने कलात्मक लोग हैं और इनमें इतनी गरीबी क्यों आ गई? आखिर क्या बात है?

पता हुआ कि वहाँ जर्मन लोगों से बड़े impressed हैं क्योंकि टर्की से बहुत से लोग जर्मनी गए थे। इसलिए जर्मन लोगों को बहुत मानते हैं और ये कहेंगे कि आप लोगों के यहाँ खाना है बहुत बढ़िया, ज़रा भारी है पर अच्छा है, बहुत स्वाद, बढ़िया है। पर गर आप टर्किश खाना खाएँगे तो आप कहेंगे माँ ये तो खाने की बिल्कुल चरम सीमा है। और एक साथ एक होटल में हम गए थे 5000 आदमी एक साथ खाना खा रहे थे और गरम-गरम ऐसी फूलों हुई रोटियाँ कि पूछिए नहीं। मुझे ज़रा खाने को वैसे इतनी ज़्यादा अक्ल नहीं है पर मेरा वर्णन करना कोई विशेष ना होगा पर अगर कोई टर्की जा कर कोई खाना खाए तो वाह-वाह ऐसा तो हमने कभी खाना खाया ही नहीं। बहरहाल जो भी हो इतना अच्छा वहाँ खाना मिलता है कि परदेस से वहाँ लोग आ करके खाना खाते हैं। पर आपको हैरानी होगी कि ये टर्किश लोग जर्मनी से खाना मंगा कर खाते हैं। और कपड़े सिलते हैं वहाँ जर्मन भेजते हैं, कपड़े वो वहाँ सिले जाते हैं टर्की में, फिर वापस जाते हैं जर्मनी में फिर वहाँ से import होते हैं। ये अपने यहाँ भी हैं काफ़ी ये ब्रीमारी कि imported चीज़, ये हम imported लाए। Import करने का जैसा इस देश में कुछ भी नहीं। एकदम रद्दी लोग। क्या बनाते हैं वहाँ अच्छा घड़ी, घड़ी बनाते हैं; ये तो गुलामी की चीज़ है बेकार है। अपने देश में जो चीज़ें बनती हैं उसका क्या कहना। उनके यहाँ जो Pottery बनती है टर्की में, आपको दुनिया में ऐसी Pottery नहीं मिलेगी। China से भी better, लेकिन उनके Dinner set में खाना खाते हैं तो



आप गरीब नहीं होएंगे तो क्या होएंगे? और कहेंगे हम बहुत गरीब हो गए। तो जाओ और अब जर्मनी में जा कर भीख माँगो, वो अच्छा रहेगा। तो शारदा देवी की जिस देश में इतनी कृपा है तो उनको क्या जरूरत है परदेसी चीजों को इस्तेमाल करने की? उनके ना तो संस्कृति में कुछ है, न तो उनके कपड़ों में कुछ है और नही उनके खाने पीने में कुछ है। सब वासी खाना खाते हैं सुबह से शाम तक। ताज़ी सब्जी वहाँ मिलती नहीं। अब काँटे चम्मच से खाए बगैर आजकल लोग सोचते हैं कि आप देहाती हो गए! अब बाहर के सहजयोगी हाथ से खाते हैं और अपने Indian सहजयोगी जो हैं काँटे चम्मच से खाते हैं। यहाँ तक इस कदर हम अंग्रेज होने की कोशिश करते हैं कि गणपति पुले में बड़े मुश्किल से इंडियन्स के लिए और Foreigners के लिए अलग-अलग Bathrooms बनाए। Indians के Indians ढंग के और Foreigners के Foreigners ढंग के। तो Indians ने कहा हमें तो वैसे ही अंग्रेजी के ढंग के चाहिए माँ। अंग्रेजी ढंग के आपको चाहिए। और Foreigners बहुत खुश हुए कि हिन्दुस्तानी ढंग के हमारे लिए। Very clean Mother, very clean। वो बहुत खुश हुए। लेकिन हिन्दुस्तानियों को तो attached चाहिए। पहले जाते थे जंगलों में और अब attached! इतनी अंग्रेजीयत हमारे अंदर आ गई। बहरहाल उसमें भी हर्ज नहीं। तो बेचारे वहाँ के leader साहब आए कि माँ मैं क्या करूँ? मैंने तो अंग्रेजों के लिए वो बनाए, उनको वो पसंद नहीं और हिन्दुस्तानियों के लिए जो बनाए उनको वो पसंद नहीं। मैंने कहा अंग्रेजों

की जगह हिन्दुस्तानियों को रख दो और हिन्दुस्तानियों की जगह अंग्रेजों को। Solution तो निकल आया लेकिन मेरे दिमाग में ये बात आई कि ये अच्छी बात नहीं। जो जंगलों में जाते थे वो बड़े अच्छे थे। ये एहदीपना का लक्षण है। हाँ बुढ़े लोग हाँ मेरी समझ में आती है लेकिन जवान लोगों को एहदीपना की कहाँ से बात चढ़ती है। क्योंकि वो विदेशी चीज़ है इसलिए बहुत ज्यादा Smart है। कम से कम औरतों में कुछ अक्ल आ गई है। पहले मैं नायलोन की साड़ियाँ हमारे घर वालों के लिए लाती थी तो बहुत खुश होते थे, उन्होंने कहा माँ हम तो अपने यहाँ की साड़ियाँ ही पहनते हैं, ये हमें नहीं पसंद। अब वहाँ कोई सिल्का साड़ियाँ हुई? वहाँ से तो लाएँगे तो नायलोन की साड़ियाँ ही लाएँगे। मत लाओ साड़ियाँ हमको नहीं चाहिए। वो मेरे घर वाले। लेकिन बाकी लोगों में ऐसा नहीं। एक देवी से हमने कहा कि वहाँ तो नायलोन ही है, मैं तो शिफान पहनती हूँ सिर्फ शिफॉन। अच्छा ये मोटी है और मैं शिफॉन पहनती हूँ। मैंने कहा कितने गज लगते हैं आपको? और इस कदर हम लोगों में जो पहले की औरत की शालीनता थी वो पैसे वो बचाती थी रोकती थी और उन औरतों का हाल ये है कि वो आदमियों से भी ज्यादा खर्च करती हैं। Hair dressers के पास जाओ। नाखून कटवाने हैं पता नहीं क्या-क्या? अमेरिका में एक आर्टिकल निकला था बहुत अच्छा कि आजकल इसलिए Divorce हो रहे हैं, क्योंकि Hair dresser आ गए हैं। कुछ मुझे संबंध समझ में नहीं आया। कहने लगे ऐसे आदमी किसी एक औरत पर गर फिदा हो जाएँ

तो वो उनके Hair-dress से। अब दूसरे दिन उनका Hair dresser बदल गया उनका भी मन हट गया। अब रोज ही गर आप Hair-dress बदलते फिरिए और उतने आप पति करिए, उतनी आप पत्नियाँ करिये तो बड़े आश्चर्य की बात है। उनके पागलपन सीखने की अपने को जरूरत नहीं। कम से कम हिन्दुस्तान में औरतों ने अपना तरीका छोड़ा नहीं। जिस तरह से वो चलती हैं, घूमती हैं, अपने को वो समझती हैं। जिस दिन औरत ने अपनी शालीनता छोड़ दी उसी दिन उस के अंदर से जितना कुछ शुद्ध कला का स्वरूप कहिए, या स्त्री का स्वरूप, पति का स्वरूप, माता का स्वरूप सब खत्म हो जाएगा। ये शारदा देवी की कृपा में रहने वाले सब लोगों को पता होना चाहिए। एक कहावत है।

"Art is in hiding the art"

कि आप जो भी कुछ करते हैं उसको दिखावे की जरूरत नहीं और उसमें Show बाजी की जरूरत नहीं। किन्तु आप जो कुछ भी करते हैं, पहनते हैं, ओढ़ते हैं गर आपको शारदा देवी की पूर्ण मेहरबानी चाहिए तो दूसरों के लिए करिए, अपने लिए नहीं। दूसरे क्या कर रहे हैं। तो लोग कहेंगे कि हाँ एक Actress बन कर घूमेंगे, सब लोग हमें देखेंगे, और क्या। बहुत Popular हो जाएँगे। नहीं! मैंने देखा है जितनी भी Actress लोग हैं उनका नाम ऐसे लोग लेते हैं जैसे कोई रास्ते पे खड़ी औरत हो। उसकी कोई इज्जत नहीं। नुमाइश की चीज है। सारी चीज में भी शारदा जी का एक आवरण होना चाहिए। संगीत, आपको मालूम होना चाहिए। चाहे देहात का ही

हो। ऐसे भी लोग मैंने देखे हैं कि जो औरंगजेब से भी बढ़ कर हैं। संगीत वे जानते नहीं लेकिन बोलेंगे बहुत। एक साहब बड़े अपने को संगीतकार समझ कर बैठे।

मैंने कहा, हैं कौन महाराज? बोले इनका बड़ा भारी Association है संगीत पर मैंने कहा अच्छा। तो कहते अभी इन्होंने गाना गाया था और बाजा भी बजा रहे थे। वाह-वाह, तो इनसे ये कहिए कि दरबारी गाए। तो दरबारी तो गा चुके भाई। अभी दरबारी गा चुके। तो अब क्या दरबारी गाएँ। तो तानड़ा गाएँ। दरबारी, कानड़ा एक ही बात।

हर प्रोग्राम में हाजिर, हर जगह अध्यक्ष। Musician से पहले उनको ही हार पहनाया जाता। मैंने कहा ये बहरा है कि क्या है। ये दरबारी गा रहा था या क्या। तो फिर आप इस दौर में आए क्यों। ठीक है आप संगीत के लिए नहीं आए। फिर इसमें क्यों आए। हर चीज में मास्टरी।

एक देवी जी थीं। वो तो पता नहीं क्या थी अपनी Govt. में। उनके बाल पक गए और वो कला वला कुछ नहीं जानती थीं। कला की सूक्ष्मता कुछ नहीं जानती थी और बड़ा नाम था। तो गर आपको शारदा देवी के शरण में रहना है तो अपने गाँव में, अपने देश में, जो कुछ होता है और जो कुछ आज तक उन्होंने बनाया है, कलाकारों ने उसका इज्जत करनी चाहिए। अजंता नहीं देखा लोगों ने पर स्विटजरलैंड जाएँगे! अजंता जैसी चीज Switzerland के नाम के बाबा के दादा कोई नहीं बना सकता। Switzerland में देखने का क्या है? पत्थर। हम



तो Switzerland गए थे। अजंता नहीं देखी? आबू नहीं देखे। जो अपने देश को बारें में जानेगा ही नहीं वो इस देश को प्यार कैसे करेगा?

जब कला इस देश में चारों तरफ से बह रही है। चारों तरफ से बहने लगी है। सो कला की तरफ रूचि रखना और अपने देश की कला को पहले अपनाना चाहिए। नहीं तो वाकई में बेवकूफी की भी हद होती है। एक साहब ने मुझे बड़े Special बुलाया। ये बहुत दिन पहले की बात है। 30 साल हो गए होंगे अमेरिका से आए। आप माता जी को बुलाओ। उनकी बहन हमारी सहज योग में हैं। आप Airport पर जाने से पहले आपको एक चीज दिखानी है। अमेरिका से आए थे मैंने कहा पता नहीं क्या लाए हैं। मैं वहाँ गई। देखती क्या हूँ वो एक पंप ले कर आए हैं और एक बलून में भरने लगे और उसका सोफा बनाया। कहने लगे देखिए। अब विराजिए इस पर। मैंने कहा भई देखो, मेरे पास बहुत ज्यादा Vibrations हैं। ये फट जाएगा। मेरे लिए कोई तख्त-वख्त बिछा दो तुम, उस पर मैं बैठ जाऊँगी। मैं अपनी देसी हिन्दुस्तानी मोटी औरत हूँ, मेरे बस का नहीं है। अरे कहने लगे आप पर कुछ impression ही नहीं पड़ा। मैंने कहा impression अभी पड़ा है पर जब इस पर से मैं गिरूँगी तो Depression हो जाएगा। तो सबसे पहले जो बात कही वो अब फिर कहूँगी कि शारदा देवी की कृपा आपके इस भारत वर्ष पर बहुत है और क्योंकि पाकिस्तान व बांग्लादेश भी इसी देश का एक भाग है वहाँ पर भी है। पर धीरे-धीरे हट जाएगी। आजकल तो लोग वहाँ एक दूसरे को पत्थर ही मार रहे हैं। कुछ लोग

औरतों को ज़मीन में गाड़ कर मार रहे हैं और कुछ लोग, कराची में कल देखा मैंने, दूसरों को पत्थरों पर पत्थर मार रहे हैं। वहाँ पर कला कैसे होगी? तो इस भारतवर्ष में जो देवी की कृपा है उसे आप अपनी नज़रों से देखिए। उसको समझिए, उसका आनंद उठाइए। फिर नाट्यकला है, बंगाल में और महाराष्ट्र में, नाट्यकला बहुत ऊँची है। वहाँ लोग Cinema नहीं जाते। नाटक को जाते हैं। महाराष्ट्रियन लोग आप लोगों जैसे रईस नहीं हैं। पर पाँच रु. का टिकट हो चाहे सात रु. का हो वो जा कर नाटक देखेंगे। इसलिए नाट्यकला।

पहले सिनेमा बहुत अच्छे थे। पर अब सिनेमा तो गड़बड़ा गए। अब नाटक भी गड़बड़ा जाएंगे और ना जाने क्या-क्या हो जाएँगी। कुछ-कुछ ऐसी अजीब चीज़ें देखने में आई हैं कि लगता है शारदा देवी यहाँ से भाग खड़ी हो जाएँगी। उनका मान तो छोड़ो उनका बिल्कुल अपमान लोग करते हैं। इतनी विचित्र चीज़ें मैंने इस India में देखीं। मुझे आश्चर्य लगता है कि ये ऐसे चल कैसे रहे हैं। अब उन्होंने कहा है कि फिल्मों में से हम निकाल देंगे ये वो। हमारे जिन्दा जी हम अगर देख लें कि ये गंदगी निकल जाए तो बड़ा आनंद आएगा। तो India की जो Art है वो सूचक है। जैसे आप Chinese Art देखिए तो सींग जैसे, एक भूत के जैसा बना है Chinese, और Egypt की Art देखिए तो सब Dead है। कहीं वो Mummies बनाएंगे, ये आदमी ऐसे बनाएंगे जैसे कोई लाश खड़ी कर दी। पहले England, America में कला ठीक थी जब तक realistic बनाते रहे। फिर impressionistic बनाया, तब तक भी ठीक थी पर अब वहाँ जो Modern

कला बन गई है ये आपको मेरे और किसी भी इंसान के बस की नहीं। ऐसी विकृति आ गई है कि लगता है शारदा देवी वाकई भाग गई हैं और जितनी गंदी और जितनी उल्टी-सीधी और जितनी अधर्मी Picture बनेगी उतना ही उसका दाम, सिनेमा में। शारदा का बड़ा अपमान है। आप सब सहजयोगियों को कला की समझ होनी चाहिए और कलात्मक चीजें आप इस्तेमाल करिए। खासकर हाथ से बनी हुई। तो ये **Ecological Problem** ही खत्म हो जाए।

अपने घर में दो सुन्दर चीजें होने से अच्छा है बनिस्वत 25 प्लास्टिक की चीजें और 40 पेपर प्लेट्स। ये अपने भारत की संस्कृति हैं। इसके रोम-रोम में शारदा का प्रकाश है। औरतों ने इसे बचाए रक्खा है अब आदमियों को भी चाहिए कि इसकी रक्षा करें। सब क्योंकि अब हिन्दुस्तान में ऐसे बहुत से लोग हैं जो चार रंग से ज्यादा पांचवाँ रंग नहीं जानते। आप जानते हैं ना डाक्टर साहब बहुत से रंग, आते हैं? नहीं तो डॉक्टर लोग नहीं जानते। मैं तो डाक्टरों के साथ रही हूँ, डाक्टरों के साथ पढ़ी हूँ। इनको कला कभी नहीं आएगी। लेकिन जानते हैं तो बहुत बड़ी बात है। सो वो भी सूक्ष्म दृष्टि अपने अंदर आनी चाहिए। नाट्य कला में, हर चीज में, नृत्य में हर चीज में। अब ये नहीं आदमी औरतों जैसे नाचें, ये नहीं लेकिन आदमी, आदमियों जैसे, औरतें औरतों जैसे उसके शुद्ध स्वरूप में जब उतरें तो तब शारदा जी की तो कृपा है ही। संगीत में नृत्य में मैंने बहुत दफा देखा है कि लोग जब हमारे सामने बजाते हैं तो बहुत जल्दी उनका नाम बढ़ जाता है, बहुत नाम होता है।

बहुत अच्छा बजाने लगते हैं। शारदा जी की कृपा हो गई उन पर। लेकिन आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि हमारे देश का जो संगीत और नृत्य है, ऐसा कहीं भी दुनिया में नहीं है। कहीं भी।

अब तीसरी जो हमारे अंदर शक्ति है त्रिगुणात्मिका, वो महालक्ष्मी की शक्ति है। अब लक्ष्मी जी की पूजा तो अभी करके आए हैं टर्की में। वहाँ गरीबी आ गई थी इसलिए। पर जब तक जर्मनी से वो सामान मंगाना बंद नहीं करेंगे तब तक उनकी गरीबी नहीं जाने वाली। कहने लगे अब हमको उसी का taste हो गया। मैंने कहा वाह भई। अब भूखे मरोगे तो क्या होगा? तो मैंने सोचा वहाँ लक्ष्मी जी की पूजा हो जाए तो दीवाली वहाँ हो गई। अब महालक्ष्मी की जो पूजा है यह सिर्फ साधकों के लिए।

जब लक्ष्मी जी का पूरी तरह से उपयोग ले लिया और बहुत हो गई लक्ष्मी, जैसे बुद्ध को हुआ था, महावीर को हुआ था, उपरति (विरक्ति) आ गई और उपरति आने के बाद वो परमात्मा को खोजने निकले। ये जो खोजने की शक्ति है ये महालक्ष्मी की शक्ति है। ये महालक्ष्मी का temple है कोल्हापुर में, स्वयंभू है। तो वहाँ के जोगवा गाते हैं, कि हे अम्बे तू जाग, हे अम्बे तू जाग। ये नामदेव ने लिखा 16वीं शताब्दि में। वहाँ के ब्राह्मणों से मैंने कहा कि महालक्ष्मी के मन्दिर में ये क्यों गाते हो भई?

कहने लगे पता नहीं अनादि काल से यहाँ चल रहा है यही गाना। जब से नामदेव हुए हैं। तो अम्बे कौन है? कहने लगे देवी है कोई। मैंने कहा आपको इतना भी नहीं मालूम? मैंने कहा आपको तो मैं नहीं समझा पाऊँगी। ये बड़ी



मुश्किल है। पर महालक्ष्मी के मन्दिर में भी अम्बें जागती हैं। वो वैसे। मध्यमार्ग में महालक्ष्मी है। उस मार्ग में आपकी सारी खोज left की right की, बुद्धि की सब खत्म हो जाती है। और आप मध्यमार्ग में आ गए। जब आपने खोजना शुरू कर दिया तब आप पर महालक्ष्मी की कृपा हो जाती है। Bible में इसे Redeemer कहा है। तीन शक्तियाँ बताई उन्होंने। पहली शक्ति को कहा है Comforter, Left side की। Right Side की को कहा है Councillor और बीच वाली को Redeemer ये Holy Ghost की तीन शक्तियाँ हैं। सो जो मध्य मार्ग में आप प्रवेश करने लगते हैं और मध्य मार्ग में आ जाते हैं तब आप एक साधक हो गए और साधक के ऊपर महालक्ष्मी उमड़ पड़ती है। महालक्ष्मी की कृपा उस पर होती है। महालक्ष्मी की शक्ति का चढ़ना बहुत मुश्किल है क्योंकि कभी मन Left को जाता है, कभी Right को जाता है। कभी left को जाता है, कभी Right को। एक भाग कुण्डलिनी के जागरण से ही मध्य मार्ग को प्राप्त करते हैं।

पहले तो वो एक सोपान ब्रिज बनाती हैं। Void और उससे गुजर कर कुण्डलिनी शक्ति, मध्य मार्ग से गुजरती हुई ब्रह्मरन्ध्र को छेदती हुई ब्रह्माण्ड से एकाकारिता प्राप्त करती है और जब ये घटना हो जाती है, उसके बाद त्रिगुणात्मिका मिलकर के आपकी आज्ञा चक्र को छेदकर जब आप सहस्रार में आते हैं तो यहाँ आदिशक्ति का स्वरूप महामाया का है। सहस्रारे महामाया, सहस्रारे

महामाया। जब सहस्रार को खोलने का काम आता है तो वो महामाया का स्वरूप धारण करती है और वो स्वरूप बहुत छिपा हुआ, बड़ा छिपा हुआ और जैसे-जैसे उसे जानने का आप प्रयत्न करते हैं, तो आप सूक्ष्म से सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतर हो जाते हैं। यह सूक्ष्मता अत्यंत आवश्यक है क्योंकि हमारे अंदर जो कुछ भी गौरवशाली विशेष धन है उसको जानने के लिए सूक्ष्म होना बहुत आवश्यक है। उसमें एक बाधा आती है और वो है आपकी left और Right की खींच। इसलिए हमसे हमेशा कहते हैं कि अपने को आप प्रत्यक्ष करा करो। Introspection दूसरों को नहीं, अपने को। धीरे-धीरे ये होने से आप सहज में उतरेंगे। आप चक्रों के बारे में जानते हैं। महाकाली की शक्ति के बारे में मैंने बता दिया और महासरस्वती के बारे में, और महालक्ष्मी के बारे में मैंने बहुत बार, बहुत बार बताया है। ये सब बताना बताना रह जाता है। जब तक साधक उस स्थिति को प्राप्त नहीं होता उसे चैन नहीं आता। उस स्थिति को प्राप्त करने पर भी उसको इस्तेमाल नहीं करते तो ये विश्वास पक्का नहीं बनता और निर्विकल्प में उतरना मुश्किल हो जाता है।

आज का lecture कुछ ज्यादा हो गया क्योंकि विषय ही कुछ ऐसा था। ये तो तीनों शक्तियों का वर्णन किया लेकिन उससे परे आदिशक्ति है और उनका वर्णन करना कोई आसान नहीं। वो बड़ी ऊँची चीज़ है। उनका वर्णन करना तो कठिन है। आप ही लोग उनका वर्णन कर सकते हैं मैं नहीं। ये आप पर छोड़ती हूँ। सबको मेरा अनन्त आशीर्वाद।

# ENGLISH TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Today we are going to worship Adi shakti.

Everything is covered in it. Many people have not even heard the name of Adi shakti. We are the worshippers of Shakti. Here we are Shaktidharmi (religiously devoted to shakti) and many kings have been worshipping Adi shakti. Everyone has different deities and the names of each deity is different. The name of the deity of this place is also different, it is "GANGAUR". But Adi shakti was once born in Rajasthan state whose name was "SATI DEVI". It is her grace that we find our culture the Dharma of wife, Dharma of husband, Dharma of ruling etc. which are nourished by her Shakti. You all know the story of Sati Devi, I don't have to tell you in new way but she was GANGAUR. She was married and while she was returning after marriage with her husband some of the bad elements surrounded them and killed her husband. She came out of the bride's carriage, took the Rudra form and destroyed all of them who attacked her husband and then she finished herself also. We should see in this that since childhood till marriage she did not disclose that she was Maha Maya in any condition.

It is necessary for Adishakti to be in Mahamaya form because the one who has whole powers and light within has to take Mahamaya form. The reason is all those great powers which in this World, initially they came in the form of Surabhi (Aroma) Shakti, which was the cow. In her all the deities reside and after that once she came in the form of SATI. Only once she incarnated in RAJASTHAN. I told you before that my relation with this state is very ancient because Chitaurgarh's (Famous city in Rajasthan state of India) "Shishodia" dynasty were my ancestors.

Adishakti has unlimited powers and Sati has all of them. But it is important to keep those powers hidden. There are two reasons for it. Firstly, if people come to know that she is Adishakti they may attack her because they all are evil, stupid and standing against God. They earn money on the name of God and misuse it. If these people come to know that Adishakti has incarnated in this World then either they will run away with fear or they will get collective and try that the work of Adishakti in this Kaliyuga should not be successful. So it is very important to take Mahamaya form.

The second reason is very that she has to do very deep, subtle and important work which has not been done by anyone till now. That is collective realization. Forget about collective, even to give realization to one person it takes years together to do this great work and that too with such a care that it should not harm the other person in any way. It is like one person is made to cross the river sitting on the boat without any effort. Yesterday I told you that how religion has got inverse. Those who told about religion were absolutely all right but to whom they talked about religion were not right people. So they did not understand religion but interpreted and confused it. If some person looks at his religion and thinks about it then he will run away from his religion because the things which are happening on the name of religion are very dangerous.

Somewhere it is insulting women, somewhere torturing children and somewhere it has become robbery. Every kind of wrong things are done on the name of Religion. Once the copies of "GEETA" came in Bombay which were printed in England. The people were very happy that see the Geeta is now being printed in England too!! What can be more greater than this? Indians already were on the feet of Britishers...and now if Geeta is printed in England then Indians thought Oh! How great!! what a miracle!!

But there was an Officer in Customs who thought that till today no Britisher could even speak our simple Hindi language, then who is this great person who can write Geeta in Sanskrit language. He felt something wrong. He opened one of the book and saw the whisky bottle hidden inside, he



understood and checked all the books and they were Whisky inside and Geeta outside!! I mean to say that Geeta is very holy for Indians and even by the name of Geeta they will touch it to their forehead with respect, but the English and western people have this art of hiding things, it is wonderful and they thought to use Geeta like this. If there is any kind of table here in front of us then we will put some plastic cover and then table cloth and make it beautiful immediately. Every time I see that wherever you go you see many curtains. I asked them why so many curtains? they said nothing mother.....I removed the curtain and saw all dirty things and clothes there. To hide the hundred weakness is also a great problem of our mahamaya shakti, because these people might have learned from somewhere all this hiding. I have not taught them, but someone might have taught them as how to hide all our weaknesses and how to digest them after hiding them cleverly.

We don't try to remove our weaknesses and bad habits.....instead we try to hide our own weaknesses and we are very clever in seeing the weaknesses of others. Now this is completely reverse thing. Mahamaya's power (shakti) has been made to take out all these weaknesses and absorb them in the body and cleanse them completely. I felt in the beginning that it is very difficult task to do.

But I did not face anyone with such special or strong weaknesses which would have given me problems. I think those people run away from me, so never such question was raised in front of me. But it is amazing that all those who are possessed by bhoots and always commit wrong things and these false gurus recognize me very well, I don't know how !! Either they have eyes at the back or whatever... they recognize me before. Sahaj yogis don't recognize me .. May be their eyes get too much of light or whatever I don't understand. But you bring any person who is possessed by a Bhoot, he will just start shaking in front of me and will run away as if somebody has hit him by whip. But it is not like this with Sahaj Yogis. They don't have so much recognition of me . It is one way good also because the form of Adishakti which Mahakali is very furious. If you see that then it is finished, whereas these peoples can see everything like Elephants, Horses etc. But to show this form of Adishakti to someone else is very difficult. I don't know how many of you will be sitting in front of me?

But it is very necessary to have Mahakali form. Until unless Mahakali is present, the problems of your left side do not get cured. The catches of left side means that first of all you think about your past always. Second thing is that my father was this, my father's father was this, they also sometimes ask me that what was I in my previous life mother?

Now, one person came to me and disturbed me a lot asking me as what he was in his previous life. Then I said that look son I am not telling you what you were in your past life because there is something wrong. Why are you asking me? It is nice that in this life you are with me. What are you going to gain if you know? He said no...no..mother I will feel nice if I know. OK, if I tell you that you were king of Jaipur in your last life then will you get the Throne? If you go there, they will not recognize you. Then why do you talk about your life? Because, mother one Astrologer predicted that I was a KING in my previous life. The Astrologer told you like this to earn money. Did you give him something like a King should give ? He said mother you are joking. I said that you are talking nonsense what should I do. Here you have come to ask about your previous life. I don't know any astrology, neither I have any interest in it. You go to some Astrologer he will tell you that you were King of England etc. Now at that moment if I show Mahakali form they will forget all this! It is needed.

Except Mahakali form such kind of madness does not go away. Now, I saw that those who ran away never returned back. They never faced me again. This is very small thing but Mahakali power is needed for such kind of people on whom the false Gurus have stucked the Bhoots. The Bhoots given by false Gurus are like this that either you obey them or become like them. If they order you to go and rob somebody's house you go. You kill someone, you kill. Do this, do that. You should be totally dedicated to that false Guru with your head bend down otherwise he will get behind you. He will ask you to kill someone. If you don't kill him he will ask someone to kill you. One thing is nice such kind

of false Gurus destroyed themselves and their disciples. But here I see that even the disciples are destroyed they keep on going in their feet more and more. One person came to me with the policeman, I think I was in Ashoka Hotel at that time. My husband asked me, what is this fuss? Why did the police come? I said, go and see then they said that this gentleman, I will not tell you the name, is a doctor and has run away from Anandmarg Organisation.

Mother you will be astonished to know that he was the great worker of Anandmarg. He traveled in whole World, earned a lot of money and his Guru considered him very close. I asked, then what happened? They said he was in a Temple in Calcutta of a deity where the goat is sacrificed. They cut the head of the goat in front of deity for putting all the Bhoots inside that animal and those who are possessed get rid of Bhoots. I say, we people take down the Bhoots in the lemon because we are vegetarians! because many business caste people have come in Sahaja Yoga who are pure vegetarians.

So by cutting lemon we take out the Bhoots and make them run away. So all those people who are possessed by bad spirits can see Mahakali very clearly. They see the same furious form of Mahakali and start shaking. I am surprised that even if you get inside the Bhoot of ego then also that person can see the same form of Mahakali.

Now, there is a story from Pune. There was a public program going on in Pune. They said that Shri Mataji is not a Brahmin so we cannot have this program here. The one who is Brahmin should only come here. Therefore, the organizers there said OK we will give this in newspaper that Shri Mataji is not a Brahmin and the programme is not to be done here. Let us do the program somewhere else. No..no..no..no.. don't do this, we don't want to show this, they said.

Let us do the program here itself. No-one told me about this incident, I said so you are all people?, I don't know how it came to my mind? I asked them OK who all are Brahmins here keep both the hands towards me!!, their hands started shaking.....Oh mother! Please stop it, please stop it, you are the Shakti, please leave us. I asked them why are you shaking. I said try to stop it. I said I didn't ask your hands to shake. They said we don't know what is happening and we are feeling afraid. Now, all this ego that they were Brahmins was the reason. Then they said that mother some Brahmins are sitting on the other side also who were shaking. I said it is lie. Are you Brahmins? They said no mother we are not. But we are certified psychic cases. We have come from Thana because one person, which got cured of his madness by you, told us to come here. Now, their eyes are open. I said did you understand now? Then their shaking of hands was over.

In the beginning the power of Mahakali manifested very strongly. I didn't know what to do. The condition of Pune is such that once I told my niece to go and bring one Matka. She went to the market and found that one Matka was costing ten rupees whereas the real cost is one rupee. They said one Mataji has come so all the Matkas are sold out. These all people purchased the Matkas. I said, Oh my God! there are so many Bhoots in Pune. I asked them to bring Matkas and lemons but they didn't. Their eyes turned up and they started rotating. I left from there so there is big collection of Bhoots there. Those who were sitting with Matkas were little all right but the others were standing and doing ha..ha..ha..ha..ho..ho..hi..hi..hi..hi. So I thought that if this Shakti of Mahakali reduces a little it would be all right. Now, after curing one thing the other thing came that which you call psychosomatic like Cancer, Muscular, many other problems of the World which doctors could not cure and they never agree. Doctors don't agree till the patient dies.

They will keep on pulling the money from them. One person got Kidney trouble. I told him that I will cure it but you have to promise that this business, which you are doing, must be stopped. If you stop your dialysis then I am ready to cure it. Yes..yes..mother I agree but cure my Kidney. I cured it but after two months he again started the same business. When these doctors speak the truth and when they lie? God knows. He again got the Kidney trouble. I asked him what happened this time? He said again Kidney trouble mother. I said no it is not Kidney now the Cancer has started. He got afraid. I told him that I already warned you but you started your shop again, he said then mother how will I fill



my stomach. I have brought such a expensive machines I said sell all these machines and finish it. I have heard that this gentle man is no more in Sahajyoga. All these left sided diseases and psychosomatic diseases, which were incurable, have been cured by the power of Mahalakshmi. Therefore, Mahalakshmi's Mantras has to be said and till you awakened Mahalakshmi's principle within yourself these kinds of diseases cannot be cured. I don't understand so much of heat is emitted from such kind of people.

In London everybody uses heater. You bring one Cancer patient and awakened his Kundalini; the expense of heater will be no more. This much heat is emitted that I can't explain. Here the heat comes out and there they keep on trying because the crying goes along the Cancer. If they have the vision of Mahalakshmi then the crying stops. Forget about Mahasaraswati because this might be the vision of Mahakali, which makes the cry.

Now what to tell them? If you see in a subtle way the form of Mahalakshmi is very furious. It is said in Devi's names "Atiraudra"(very furious), "Atisaumya"(very peaceful) but Mahalakshmi is "Atiraudra". Rudra form is very necessary otherwise negativity will not run away. It is because of the rudra form it is possible. The eleven Rudras, which is present in Ekadash Rudra, is power of Mahakali and all those powers are present in the Medha in the eleven Chakras. If somebody's Ekadash Rudra is caught then you should know that he has Cancer or some other incurable left sided disease.

The science of Sahajyoga is the best. You cannot find out anything wrong with it. Now, people have come with Cancer, Neurosis this and that, fifty kinds of problems like Aids etc. and started telling that mother. We never went to any Guru. I said, if you did not your mother might have gone. Yes, I read the books of Rajnish and we have the photo of Satya Sai Baba in our house. I said, try one or two more, some more diseases will come, and then come to me. They will go there...catch the diseases and come to me. So the Devi has to show them her furious form, isn't it? Or shall we ask the Bhoots politely that come. come, eat some food, and take this sweet. Many people asked me that Oh mother how can Devi have furious form? If she is mother, how can mother be in furious form? why not? To make her children all right the Devi has taken furious form also. The Saumya form (compassionate and peaceful) can be harmful for her children some times. Therefore, the Rudra form (furious) is necessary. They cannot be corrected other than this.

But the Devi did not harm anybody with her Rudra form. Like before when she incarnated as Mahakali she killed this, she killed that, she pulled out the tongue, she did this, she did that, nothing of that sort. Today's Mahakali's form that is Rudra, now, it is not required to do all those things. Human beings get afraid just by seeing this form. When he sees his Rudra form his diseases get cured because the negativity inside runs away. So there is no need to cut some body's throat or to cut some body's tongue or to take out the eye. If Mahakali's form is not used then we cannot do the work of Sahajyoga because all these negative forces block your Chakras and without curing your Chakras Kundalini will not come up. That is why the Mahakali form is very much to be worshiped and to be praised which does not harm physically, emotionally or mentally. Only the bad thing run away by its form.

Now, these quarrels between husband and wife are a big problem because the wives have studied a lot and the husbands want them to remain like villagers and illiterate. Now, she is not a village woman, how will you make her? Once you became the city person, you became. Whether you wear pant or a village dress.

The mind has become urban. When the mind has become modern then the women like qualities reduced. Women got more masculine. By becoming modern and living in the city the women lost their most important quality of being feminine full of soberness, motherliness and tolerance. These qualities of women do not permit her to go to the battleground.

Queen Padmini burnt herself along with three thousands other women inside the fort to protect them from getting into the hand of enemy. They did not come out with the sword in their hands. But

when it was needed then she came out like queen of Jhansi with the sword in her hand. I still remember that British said that it is the victory of the queen of Jhansi. In our country there had been many such women of brave character. There had been many women of great character who were completely devoted to their husbands and were perfect in the Dharma of wife and looked after their family and husband. When Gandhiji called out the women of India gave him all their bangles and jewelry of gold. There is a story of the great kind Ranapratap from Rajasthan that when he saw that his daughter was eating Chapati and a cat took it then he got a doubt in his mind that why am I doing so? Is it because of my ego? Why don't I surrender to my enemy Akbar? At that time his wife who was a Kshatriya (warrior caste), got up and took the spear in her hand and went to kill her daughter because this weakness came in her husband to surrender to the enemy because of the daughter. Then Ranapratap's eyes were opened and changed his decision. In our country if the women have to think they should think that how the women of past used to put the Kumkum on the forehead of their husbands to send them to battleground.

Who fought with these British in India? Men, but the power working behind was of women. Today women have gone weaker so the men have also become weak and powerless. Till the purity and loving mother like qualities develop in a woman the Grahalakshmi Shakti does not get awakened in her. But she should be wise. Grahalakshmi has to be wise and intelligent. So we can say that when this Mahakali Shakti gets cool and peaceful it becomes Grahalakshmi. We believe in the power of Fatima as perfect Grahalakshmi and she should sit on the Throne of Grahalakshmi. By this power of Mahakali a woman can correct her children. She keeps her character pure and we are witness that the "Pativrata" (one devoted completely and only to her husband) women's devotion towards her husband cannot be destroyed by anything because it is her Shakti. People and negativities are afraid of "Pativrata" women. Also the husbands should understand that the power within them is from the shakti, their wife. And if that power comes in husband from wife then husband should see that his wife is Pure or not...she is devoted and motherly or not. If the wife is dominating... keeps on ordering...like sit there.... go there...come with me here.... do this ....do that...wear this, behave like this.....etc and shows her finger with order to him.....then he becomes silent and obeys. Husband has all the right to correct his wife, but with love, he should have patience and correct her dominating nature or wrong habits.

Husband has to be very diplomatic and patient. The women who have feminine quality should be very humorous. she should smile and solve any problem and with smile she should be able to convince. Women should be pure, loving, sincere and motherly. They have to be very sharp. I have told you to read Sharadchandra for learning the qualities of women. You should not go into Politics. And not at all to go in this dirty economics. But the whole axis and balance of society is the responsibility of women.

The women who looks after her children and looks after her home and kitchen, cares and loves her husband and gives him nice health and satisfaction.....makes a very strong time. Yesterday I told you that because of Indian women our society is still all right. But the nature of women should be peaceful and glorious.....their shakti has that peace. By becoming aggressive she loses her shakti. By her peace and love she can win whole world. Her walking, her talking, her dressing and style should all be just like devi (deity). She is Mahakali shakti. She has many vehicles on which she sits but the one is when she sits on an Elephant. We call her "Lalita Gauri". Her artistic nature and her style ....all are very respectful and beautiful.

It is not required to cover your face....neither to cover your head.....but you all women should have purity in your eyes. That peace should be in your eyes. They should be very feministic ones. Because she is Rudra (furious).....she has to be very peaceful also (Saumya). That is why it is said that you must cover your face in India because you are Mahakalis. You should be so pure that anyone other than your husband sees you with bad eyes should be Bhasma (destroyed into ashes on spot). Whoever sees you with lust should die immediately. This is the power of Mahakali within you. Which is very



calm and peaceful from outside but from within it is strong....it works from within. So the people say that this mahakali shakti is very powerful and furious mother that she is so peaceful and calm that you will be surprised that is she mahamaya? She is mahakali but she will be like a newlywed bride!!!,,she will be so shy....speak so sweet words....as if the flowers are shedding.She loves so much that it is unbelievable. But this is the shakti of Mahakali. Any Bhoot or negativity cannot touch the one who achieve this mahakali power. Who can touch her?....she will catch the bhoot !!! and the women who is Pativrata and pure and like mahakali...can destroy anyone with once powerful glance of her eyes.

Now, the other power is of Mahasaraswati by which we get creative and intellectual ideas in light. It is by the grace of saraswati. "Sharda"...by the grace of sharda we get beautiful thoughts within us, very peaceful, very cool poetic thoughts come within...not the melancholic poetries of crying and pain etc. very great national songs were written, the people wrote poetries of bravery but today I don't know where all has gone. Now you hear all those horrible songs and poetries. Even in front of shri ganesha.

Because man has lost his sensibility. They can take out anything out of their intellect. I will say in this the most horrible was Frayed. I did not see anyone greater than him. Without hesitation he put his thoughts in front of people and they agreed with his nonsense. I will not tell you his thoughts here in India because they are very dirty and I can't tell you all. It is nice that he did not come to India otherwise he would have been cut into pieces by people. If you read even one line of his philosophy.... you will come to know.... how much shameless and bhoot or Rakshasa he was. Whatever it is he used his pen and intellect (mind).

They wrote everything against Sharda (Saraswati) and everywhere it started that, we have Bhakti. Whatever we write. The newspapers of today are the same, whatever comes in their mind they write. Anything stupid. They will never write anything good. Who is dead?....he is dying so they will write in newspaper that he is dying....everyday it will be published that he is about to die. Let him die and then write peacefully that he is dead. They speak the greatest lies. They are not afraid of Sharda Devi. She is the giver of truth and the deity of truth. The light of truth, which comes in our head, is from Sharda Devi herself.

So when you are writing...you don't think that from where you are getting the power to write something. Who has given you this power of writing?...it is from Sharda Devi. It is from Sharda or from some Bhootni? Now there is Mr Aurbindo.... he went from somewhere to somewhere and lost somewhere...there is no meaning at all in what he has written. He is very famous.... he has a street named on him..Aurbindo Marg.

I never go from that street because don't know where he went. Whatever came to his mind he kept on writing. Nothing in his writing was truth. He sang the praise of Savitri. And that Savitri who was old and had wrinkles on her face he told that she would get young.she died and was buried but never got young. You find books after books of that. All stupidities. I don't know how many people belong to such religions. Then we see today's 'intellectuals'. I read that one gentleman thinks himself as very great writer. I forgot his name. He is Punjabi. He never read Sanskrit and he wrote that Shri Krishna belonged to Shudra caste (lower caste) and was black and Rama belonged to Brahmin caste. I said that from where have you read this? I should tell you the truth that even the book written by Jawaharlal Nehru- DISCOVERY OF INDIA is the discovery of something else but not of India. Such a superficial book. He wrote book about India. There is no depth in it. Whoever you see starts writing on something. I have not written anything till now.

I think that I should write something, which enters into the head of everyone. Till now everyone's heads have not opened to that extent. No one wrote. Yes even Mohammad sahib did not write anything. He never knew how to read and write. He just narrated to 40 people that he saw and felt all this. I had this revelation and it was like this. They also did not know how to read and write, so for 40 years nothing was written. There was a very stupid man; his name was...whatever...this was told to

me by my father. Now it is confirmed that it is true. That person was very devilish and he killed Hazrat Ali and his sons, then he killed the caliph and his mother ate the liver of that Caliph. He was such a horrible man...he was the enemy of women. He edited the Quran. Now you tell me they say Quran...Quran.... there is no authenticity of Quran. In Bible also Paul destroyed everything. At least Christians agree with it. They are Christians for namesake. It is nice, because if you tell all this to some one they will run to kill us. This is the history of Quran for which they fight so much.

Where is the involvement of Sharda Devi in it? Many people wrote many things by the grace Sharda Devi. Gyaneshawara wrote Gyaneshawari!! Then he wrote one more book after this. It is so beautiful that you feel that you are taking elixir. Saints have written on whom the Sharda devi has her grace. In the beginning of Gyaneshwari he writes with the blessings of Sharda Devi that whatever I am writing is to please the Sharda Devi, but these words will not give you pain in any way. Like the petals slowly fall from the tree ...in the same way my words should fall on your hearts and make it fragrant. What a wonderful writing. Such a beautiful poetry...such a beautiful forms of his thoughts. It is because I know the Marathi language.

But there had been many great poets in English language too! Their poetries have been given in our book called Vision, you all must read it. His name was William Black. Such an enthusiastic poetry that it will fill you with enthusiasm, as if Devi Sharda herself has come out of his poetries and entered within you. Same way if you read Sharad Chandra then you will start writing stories. Such writers have born in India that nowhere in the World you find them. I agree that Tolstoy was very great but Sharad Chandra was greater than him. In Maharashtra even more greater were born. One of them....there is no need to tell his name, was not translated as they say that it is all-political. What is this political matter. Is Sharada Devi politics? The greatest writers are in our country. They are not westernized but they are original Indians. They don't have money but are blessed by Saraswati.

Now Rajasthan was also blessed. Even Alexander was also antonished to see Indian culture and when he went back he took Chandravardai with him. Chandravardai was the greatest poet from Rajasthan. Then in Sufis Khusro is there, what a poetries!, Kabira is there and what to say about Gurunanaka, he is a Guru. Ramdas Swami. Even in Bengal there were one greater than other and all this is by the grace of Sharada Devi. With every World you feel religion flowing. All words arranged properly and enlightened. You feel that as if written in thoughtlessness. Such a pure explanation.

I should tell you that maximum books in Sanskrit and after that in Marathi only you find spirituality. Great and deep work was done on spirituality. Now, if somebody says that mother it was written so much in English language then is it not the grace of Sharada Devi? Now imagine that in English language they have a word for Atma is spirit, isn't it? They call liquor as spirit. They call Bhoot as spirit. Is it a language? This language is not the blessing of Sharada Devi and French is even worse than that. There is no word in French language for Chetana (awareness). At least in English you have this word 'awareness'. In England it was a kind of blessing, with great writer all politicians and wrote only on politics. Yes, one William Black is there for whom I can say. Rest all... There is one great gentleman who wrote a poetry. Poetry of weeping. If you were so much sad and suffering you would have drowned yourself in some pond at least would have been better. But this weeping poetry! Whichever book you pick up is melancholic. OK if you have some sorrow it's all right but sitting nicely and eating nicely only to earn money he made others cry. And people also enjoy crying very much! Are these all poetries by the grace of Sharada Devi? These kind of poetries are meant to fool others. One person came to my house and started telling me poetries about drinking. I said, why don't you say the poetry for the people who die on the street also? Then I narrated a poetry to him, as you know I am an instant poet. I asked him why doesn't the glass loose its balance? Even if filled completely by liquor. Why do you loose your balance? You are weaker than that glass also. After this incident he never spoke about drinking. Like this if you see you find very cheap kind of poets in the Country specially who pull God and make him like human beings. This is the greatest sin and whatever blessing of Sharda Devi are on them are to be dragged to the door of Mahakali.



One Mr. Vidyapati was a writer. He wrote about Radha and Krishna and the decoration of Radha. Where is the time for Radha to decorate herself, she is worried about whole World. Radha...Ra means energy and Dha means the one who holds it. What is the need for her to do romance? He put romance on her. There was one Wazid Ali who had 165 wives and he used to wear the Sari and become Radha. He is used to dance with Krishna. All this romanticism has no meaning, it is all-absurd. Saints have nothing to do with it. They say for Kabira also that he wrote "Saiya Nikas Gaye Main Na Ladi Thi" (my beloved left whereas I did not fight with him). It means that the beloved (life breath). Khusro wrote "Chap Tilak Sab Dini Re Tose Naina Mila Ke" (I gave away my Tilak and Chap after looking into your eyes). He was a Sufi with whom will he look into the eyes except God? 'Chap' means what Musalmans have on their forehead and 'Tilak' is what Hindus have on their forehead. He said that I have left all this after seeing your eyes. He wrote in such a simple language. So Sharada Devi is also some times in Mahamaya form.

Like 'Zen', the Zen poets write which only Sahaj Yogis can understand, no one else. As they explain things no matter how small or they paint is all very subtle and Sahaj Yogis can only feel that subtle sensivity. There should be purity in music also. If you see in the music today, they bring Japanese and English also together because they don't know how to sing pure music. If you see in the villages they sing with the blessings of Sharada Devi. All the great scriptures were written by the blessings of Sharada Devi. But in these present times I feel that Sharada Devi has stopped her blessings.

In Rajasthan I have seen since 2-3 years that the art has evolved. No doubt, by the blessings of Sharada Devi. If you see their pottery or anywhere else it is beautifully carved. The kind of colorful clothes we have in our Country are not found in Europe etc. They wear grey clothes, if they cross it they wear black. They have faces like Bhoots and over that wearing black clothes and go on the streets. Can they dare to make even one Sari like us? They all have same kind of dresses and almost same colors for all women dresses. What to say about this Rajasthan? Such a blessing of Sharada Devi. Women are very clean. They keep their house also very clean. People are very dirty; men have no concern from outside. All the garbage is thrown out side. In the West people are very neat and clean externally because men do the cleaning themselves. Here in India, can any man clean with the broom in his hand? My good ness! Indian men will loose their crown! So cleanliness and proper arrangements is also by the blessings of Sharada Devi. If we learn from the English people about external cleanliness on every Sunday getting collective, cleaning, making the garden all right etc. It will be nice. We have servants here so why should they do? Let the servants do it. This dirtiness doesn't allow Sharada Devi to come near. It is very important to be neat and tidy and artistic. You people have art. If you say that you worship Sharada Devi then you should see your house. There are many beautiful marbles, which have come out of mother earth in your state. There are many artistic things also. We should use all that.

I saw poverty in Turkey. Whereas they are very artistic people. I did not understand why they were poor if they are so artistic? What is the reason? Then I came to know that they are impressed by the Germans. Because many people from the Turkey went to Germany. That is why they respect Germans. I must say that you people have very nice food here but if you go to Turkey and eat there it is the best. We went to a hotel there where 5000 people were eating together, such a nice Chapatis! I don't have much knowledge about food but I will tell you that if you eat Turkey's food, you will say, oh what a delicious food!

Whatever it is people from outside come to Turkey to taste their food but you will be astonished to know that Turkish people import food from Germany and eat and they stitch the clothes which go to Germany, come back to Turkey as imported. Here also in our Country we have this disease of 'imported'. I have brought this imported thing etc. There is nothing to be imported in our Country. What do they make? Watches! It is the slavish object! The pottery what they make in turkey, you will not find in whole world. Even better than China! but they eat in their dinner sets then they will

certainly become poor. Then they will cry that we have become poor!. Go to Germany and beg there! it will be nice. Once Sharda Devi has blessed your country so much then what is the use of using imported things?

Western people have nothing in their culture and clothes or food. They keep on eating preserved food from morning till evening. They don't get fresh vegetables there. Now, if you see today.... they are not satisfied if they don't eat with fork and spoon, and they think that they are uncivilized villagers if they don't eat with fork and spoon. Today you see that the western sahaj yogis eat with their hands and Indians have started using fork and knife. We have become westernized to such an extent that in Ganapatipule...I made Indian and western Bathrooms separate there. Indian style for Indians and western style for western yogis. Then Indians came and said to me that they want the toilets like western style! You need English style! Western sahaj yogis were very happy to use Indian style and said, Mother they are very clean! They were very happy but the Indians want western style attached bathrooms! This much English influence is there in us. Then the leader of that place came and asked to me that what to do? I said put western yogis in Indian tents and Indians in western tents. The solution came but one thing came in my mind that it is not a good thing. Those who used to go to jungles for toilet were very nice people. This is all the comfort orientation! I can understand this with old people but I don't understand how it comes in young person's?....because it is western thing so it is very smart and modern to do like that!....Now in the case of women I would say that before they used to save money, but today they spend more than men. They wear all synthetic clothes. They go to hairdressers, they get their nails cut.... and don't know what else!?....

I read an article in America that there are divorces because of many hairdressers. I did not understand it! They said that if a man gets attracted and in love with a women is because of her hairdress. Next day the hairdresser changed.... and his interest from that women went off!!.... Now if you change your hairstyle everyday then change your husband's! and wives also. It is amazing! You all don't have to learn anything from their stupidities and madness. At least in India women have not left their style. How they walk, wear etc.... they understand themselves better. THE DAY A WOMEN LEAVES HER CHASTITY,SOBERNESS AND DIGNITY OR YOU CAN SAY THE WOMEN'S RESPECT OR WOMEN LIKE QUALITIES, FROM THE SAME DAY, WHATEVER PURE IS IN HER, THE FEMININE FORM, THE MOTHERLY FORM OR WIFE'S FORM OR ARTISTIC FORM WILL TERMINATE. All those who are blessed by Sharda Devi(mahasaraswati) should understand this proverb that," ART IS IN HIDING THE ART". That whatever you do there is no need to show off. But whatever you do, you wear or use you should do for others.

If you want the blessings of Sharda Devi on you. What are others doing? People will say that become an Actress and go on the street and people will look at us, what else? We will become popular and modern. No, I have seen that people take the name of the Actresses and Models like a women standing on the street, which has no shame, dignity and is the object of exhibition.

There was one lady. She was something in our Government. Her hair was gray and she did not know anything about Art but she was very famous. People have not seen the caves of Ajanta in India but they will go to Switzerland to see the beauty. An artistic and beautiful thing like Ajanta in India cannot be created by even the great Grand fathers of Switzerland. What is there in Switzerland to see? Stones...! The one who doesn't know about his own country's beauty, how can he love his country? One person called me specially. It is very old story some 30 years back he came from America. He said, call Shri Mataji. His sister is in Sahaj yoga. He said before going to the Airport he would like to show me one thing. I thought what is he going to show me? I went there, he brought a pump and he started filling in a balloon, which became a Sofa. He said, please sit down on it. I said, look gentleman I have lot of vibrations and this chair, which you made, will burst. Give me some hard thing to sit on. I am a fat Indian woman and it is not possible for me to sit on this. He started saying that you are not impressed? I said, impression is all right but if I fall down from this then depression will come. So I would say one thing again that the blessing of Sharda Devi is too much on India and because



Bangladesh and Pakistan were part of India, they are also blessed. But gradually it will go away.

Now a day they are throwing stones on each other. Some people are killing women by digging them in the ground and some people, I saw tomorrow in Karachi (Pakistan) were hitting each other with stones. How can there be Art. So whatever art and blessings of Sharda Devi are on India, you must see them, understand them and enjoy. Now comes the theatre (Drama). In Bengal and Maharashtra theatre is of very high quality. People don't go to see movies but to theatres. Before, the cinema use to be very nice but now it has got spoiled, even the theatres will become something else. I feel Sharda Devi will run away from here. Forget about her respect, she is insulted here. I have seen such shocking things in India. I am surprised how can they do like this. I will be very joyous to see these filthy things out of the movies in my lifetime. So, the art, which is in India, is symbolic.

If you see Chinese Art, it is like they make a horn, like a ghost. See the art of Egypt, it is all dead, they make Mummies and they make men standing like that bodies. In the past England and America were better in Art till they made realistic things. Then they made impressionistic, it was all right but today the modern art has come there and it is not such which can be understood by you, me or anyone else. Such a distortion has come that Sharda Devi has run away from there and the most dirtiest, stupid, vulgar picture they make will sell very expensive. Too much insult of Sharda Devi is there.

You all Sahaj yogis should now understand Art and use artistic things specially made by hand, then this ecological problem will finish. It is better to have one or two good things in the house than having 25 plastic things and 40 paper plates. The women from India have protected the culture and now the men should also protect it. There are many people in India who doesn't even know more than 4 colors. In theatre, dance and in everything you must have subtle vision. It doesn't mean that women should dance like men or men should dance like women. Men like men and women like women. You will be surprised to know that the music and dance which we have in our country is nowhere in the World. Now, the third Shakti, which we have within ourselves, is Trigunatmika. It is the power of Mahalakshmi. I have just come after doing Mahalakshmi Puja in Turkey because it was suffering from poverty. Till they will stop importing items from Germany they will not get rid of poverty. They said that we have got taste of their products. I say, gentlemen when you will die of hunger then what will happen? So, I thought that there should be Puja of Shri Lakshmi and Diwali was there. The Puja of Mahalakshmi is only meant for her devotees. When Lakshmi (material well being) is too much and is used too much then you get a kind of hatred from it as it was with Mahavir and Budha after that only they went to search for God.

This Shakti of searching or seeking, you get from Mahalakshmi. The Mahalakshmi's temple is in Kolhapur (Maharashtra), it is Swayambhu. They sing Jogwa there, Ambe you get awakened, you awakened. Namdev wrote this in 16th century. I asked the Brahmins(priests) there that why they sing this song in Mahalakshmi temple?.... They said that we don't know but from many ages the same song is going on here, since the time of Namadeva. I said, who is Ambe?...they said it is some deity!. I said that you people don't even know this? I said that I can't make you people understand. It is difficult but in the temple of Mahalakshmi the Ambe gets awakened....it is like this.....Mahalakshmi is in central channel, your whole seeking is there. In that path all your seeking of left and right and intellect is finished. You came on central path when you started seeking then the blessings of Mahalakshmi come on you. In bible she is called redeemer. Three kind of Shaktis are described. Comforter is the first on left side. Right side is councilor and central is called redeemer. These are the three Shaktis of Holy Ghost. So, when you enter into the central channel you become Sadhaka and Mahalakshmi rushes on you. Mahalakshmi blesses him. It is very difficult for the Shakti of Mahalakshmi to ascent because mind sometimes goes to left and sometimes to the right.

Only by Kundalini's awakening it is possible to ascend. First, it makes a bridge. Kundalini crosses void and through the central channel it pierces the Brahmarandra and gets united with Bramhand and when this takes place after this the Trigunatmika (all the three Shaktis) combine and pierces through your Agyan Chakra and come to Sahasrara then it become Mahamaya. Sahasrara

Mahamaya. When it comes to the opening of Sahasrara, it has to take Mahamaya form. That form is the hidden form, very Secret! As you try to know it more and more, you get subtler and subtler. This subtleness is very important because whatever treasure of pride and dignity we have within, to know this we have to become very subtle. In that it pulls you towards the right and sometimes to left. That is why, I always say to you to face yourself. Introspection, not of others but of yourself. Then slowly and steadily you will get deep in Sahaj Yoga.

You know about Chakras.

I have told about Mahakali, Mahasaraswati and Mahalakshmi many times. This all telling you remains only a speech sometimes. Till the Sadhaka reaches to that state he is not contented. Even after reaching to that state if you don't use these powers then your faith doesn't establish and it becomes difficult for you to get into Nirvikalpa. I have given a very long lecture today because the subject was such. I have just explained a little about the three powers or Shaktis. Beyond that is Adishakti and it is not easy to explain about her. She is very great. It is difficult to explain her. Only you people can explain her, not me. I leave it on you.

All my blessings should come on you!!



# MARATHI TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

आपण शक्तीचे पुजारी आहोत, शक्ति-धर्माचे उपासक आहोत; पूर्वी राजे-महाराजेसुद्धा शक्तीचीच आराधना करायचे. प्रत्येकजण आपापल्या देवीला मानतो; या सर्व देवतांना वेगवेगळी नावे आहेत. जयपूरच्या देवीला गंगौर असे नांव आहे.

आदी-शक्तीने एकदा राजस्थानमध्ये अवतार घेतला होता. त्यावेळी सती-देवी या नावाने हे अवतरण झाले. तिने खूप जणांना कृपाशीर्वाद दिले आणि राजस्थानी संस्कृतीमध्ये अजूनही त्याचा प्रत्यय दिसून येतो. पत्नीचा धर्म, पतीचा धर्म, स्त्रीचा धर्म, राजाचा धर्म अशा अनेक धर्मांचे या शक्तीमधून उदात्तीकरण झाले. सती-देवी ही साक्षात गंगौरच होती. तिचे लग्न झाल्यावर एकदा प्रवास करत असतांना त्या मंडळीवर गुंडांनी हल्ला केला आणि त्यातच तिचा पति मारला गेला. त्याच वेळी ती मेण्यांतून बाहेर आली आणि तिने आपले स्वरूप प्रगट केले; आणि सर्व गुंडांना ठार मारले. त्यांत तिने स्वतःलाही अर्पण केले. इथे मुख्य लक्षांत घ्यायची गोष्ट ही की लहानपणापासून लग्न होईपर्यंत तिने आपले खरे स्वरूप उघड केले नाही कारण ती महामाया रूपांत होती. आदिशक्तीला महामायेच रूप घ्यावं लागते. कारण या जगांत ज्या मोठमोठ्या प्रभावी शक्तींचा अवतार झाला त्या सर्व प्रथम सुरभि, जी गाय होती, म्हणून प्रगटल्या. तिच्यामध्ये सर्व देव-देवता सामावलेल्या होत्या. त्यानंतर फक्त एकदाच ती राजस्थानमध्ये आली. माझे पूर्वज चित्तोडमधील सिसोदिया घराण्यातले असल्यामुळे माझे राजस्थानबरोबरच नाते खूप दिवसांपासूनच आहे.

आदिशक्तीजवळ अनंत शक्त्या आहेत, तिच्याजवळ नाही अशी कोणतीच शक्ती नाही. पण या सर्व शक्ति उघड होत नाहीत, याला दोन कारणे आहेत. एक म्हणजे लोकांना ही आदिशक्ति आहे हे कळले तर सर्व तऱ्हेचे लोक तिच्यावर हल्ला करतील - कारण असे लोक अगदी दुष्ट, रानटी आणि

मागासलेले असतात; ते ईश्वराच्या विरोधी कार्यात मग्न असतात; देवाच्या नावांखाली पैसा कमावण्याच्या मार्गे असतात. अशा लोकांना आदिशक्तीचा अवतार झाल्याचं समजले तर ते पळून तरी जातील किंवा त्यांच्यासारखे लोक एकत्र येऊन या कलियुगांत आदिशक्तीच्या कार्यात अडथळे निर्माण करतील. म्हणून तिला महामायेचं रूप धारण करणे आवश्यक होतं.

दुसरं कारण म्हणजे आजपर्यंत कधीही कुणी केले नाही असे फार मोठे आणि तितकंच सूक्ष्म कार्य या स्वरूपाकडून होणार असतं. म्हणजेच सामूहिक चेतनेचं कार्य, आणि हे होत असतांना कुणालाही कसलाही त्रास न होता घडणार. जणू तुम्ही बोटीमध्ये बसून आरामात पॅलतीरावर जाणार असं.

धर्माबद्दल जे लोक सांगत होते ते स्वतः चांगले होते पण ज्यांना त्यांनी ते सांगितले ते तसे नव्हते. त्यांना खऱ्या अर्थाने धर्म समजलाच नव्हता पण दुसऱ्या लोकांनाही त्यांनी भ्रमांत आणले. धर्माच्या नावांखाली वाटेला ते घाणेरडे प्रकार होऊ लागले - स्त्रियांवर अत्याचार व छळ, मुलांची हत्या, लूटमार वगैरे विनाशकारी प्रकार.

महामायेजवळ दोष झाकून ठेवण्याची क्षमता पण आहे. ते लपवल्यावर पचवावे पण लागतात. आपण आपले स्वतःमधील दोष काढण्याबद्दल काळजी घेत नाही. दुसऱ्यांचे दोष दाखवण्यात मात्र आपण तत्पर असतो. हे अगदी चुक आहे. महामायेचे अवतरण आणि तिच्या शक्तीचा आविष्कार आपले दोष दूर करण्याकरतांच झाला. ती शक्ति आपल्यामध्ये सामावल्यावर आपण स्वतःला व आपल्या शरीराला स्वच्छ करू शकतो. आश्चर्याची गोष्ट म्हणजे सर्व भांडू व पछाडलेले गुठ (!) मला ओळखतात. त्यांनीच मला प्रथम कसं ओळखले मला समजत नाही. कदाचित त्यांचे डोळे दिपून गेले असतील. आदिशक्तीचे आपणही एक रूप म्हणजे महाकाली, जिला पाहिल्यावर तुमची

घाबरगुडीच उडेल. हत्ती आणि घोडे हे पाहू शकतात. पण इतरांना हे ओळखणं अवघड आहे, इथे किती जण बसून राहतील मलाच कळत नाही. हे महाकालीचं रुप धारण करणंही जरूरीच आहे. जोपर्यंत ही महाकाली-शक्ति प्रगट होत नाही तोपर्यंत तुमच्यातील डाव्या बाजूचे दोष दूर होणार नाहीत. डाव्या बाजूची पकड म्हणजे तुम्ही भूतकाळ आठवत बसता; माझे वडील, त्यांचे वडील असे मोठी व्यक्ति होते वगैरे, आणि त्याच गोष्टी पुनः पुनः आठवत बसता.

आतां मात्र तुम्ही भूतकाळ विसरल्यामुळे नशीबवान ठरला आहात. तरीही मला लोक विचारतात, 'माताजी, मी गेल्या जन्मी कोण होतो?' एक माणूस तर सारखाच मागे लागला, 'मागच्या जन्मी मी कोण होतो?' मी सांगितलं 'हे बघ बाळा, मी तुझ्याशी खोलत नाही म्हणजे कांही तरी विघडलं आहे. तू हे मला कशाला विचारतोस? या जन्मांत तू माझ्याजवळ आहेस हेच खूप नाही कां? तू सारखं मला तुझ्या मागच्या जन्माबद्दल विचारतोस ते कळून तुला काय फायदा?' तो म्हणतो 'मला हे कळायला हवंच'. मग मी म्हणाले 'ठीक, गेल्या जन्मी तू जयपूरचा महाराज होतास असं मी सांगितलं तर काय तुला ते सिंहसन वा राज्य मिळणार आहे कां? तू जर तिकडे गेलास तर लोक तुला घालवून देतील. मग कशाला ह्या मागच्या जन्मीच्या गोष्टी?' परत तो म्हणाला की 'मागच्या जन्मी मी राजा होतो असं एका ज्योतिषाने मला सांगितलं आहे.' मग मी म्हणाले 'तुझ्यांत तर कांही राजेपणाची लक्षणं मला दिसत नाही. त्या ज्योतिषाने पैसे उकळण्याकरतां तुला तसं सांगितलं असेल.'

महाकाली रुप घेतल्याशिवाय असे मूर्ख लोक सुटणार नाहीत. ज्या लोकांच्यात भोंदू गुरुंकडून भुतं शिरलेली असतात त्यांना महाकालीचं ठीक करू शकते. ही भुतं अशी असतात की तुम्ही तो गुरु जे सांगेल ते करता; अमक्या घरी चोरी कर, तमक्याला मारून टाक वगैरे सर्व कांही त्या गुरुने सांगितल्याप्रमाणे करत राहता सदैव त्याच्या आज्ञेत.

कलकत्त्याच्या देवीच्या मंदिरात बोकडांचा बळी देतात. देवीसमोरच बोकडाला ठार करतात व त्याच्यांत पछाडलेल्या माणसाच्या अंगातील भूत भरवतात. अशा तऱ्हेने तो त्रासलेला माणूस बरा होतो. आपण शाकाहारी आहोत म्हणून लिंबू कापतो आणि त्यांना घालवतो. या पछाडलेल्या माणसांच्या मानगुटीवरचे भूत महाकालीला ओळखते; नुसतं तिचं घोडसं रुप पाहताच ते धरधर कापायला लागतात. कुणी लगेच विचारतात की हे असं को होते? आश्चर्याची गोष्ट म्हणजे अहंकारावर हे भूत स्वार झाल्यावर त्या माणसांना महाकाली दिसते.

पुण्यांत एकदां प्रोग्राम चालला होता. कुणी तरी म्हणाले की माताजी ब्राह्मण नसल्यामुळे त्यांचा कार्यक्रम आपल्या इथे होणार नाही तिथले लीडर त्यांना म्हणाले 'ठीक आहे. माताजी ब्राह्मण नाहीत असं आम्ही पेपरांत छापून देतो आणि इथल्याऐवजी दुसरीकडे प्रोग्राम करतो.' ते लोक लगेच तसं नाही, तसं नाही करावला लागले. आणि मग प्रोग्राम त्याच जागी झाला. मला कुणी कांहीच हे सांगितलं नव्हतं तरी माझ्या डोक्यांत ते आलं आणि मी सभंत म्हटलं की जो कोणी ब्राह्मण असेल त्याने हात माझ्या समोर करावे; लगेच त्यांचे हात धरधर कापायला लागले आणि म्हणू लागले "माताजी हे सर्व आता थांबवा. तुम्ही साक्षात शक्ती आहात". मी म्हणाले "पण तुम्ही कापत को आहात? मी काही तसं सांगितलं नव्हतं. तुम्ही आपणहूनच कापायला लागलात". त्यांना आपण फार मोठे ब्राह्मण आहोत असा अभिमान होता. कुणीतरी म्हणाले "माताजी इकडे पण काही ब्राह्मण लोक बसले आहेत आणि त्यांचे हात पण कापत आहेत". मी म्हणाले की ते ब्राह्मण आहेत का त्यांनाच विचारा, तर ते म्हणू लागले "आम्ही ब्राह्मण नाही. आम्ही वेड्याच्या इस्पितळातून आलेले ठार वेडे आहोत. तिथला एक वेडा तुमच्याकडे आला आणि साफ बरा झाला म्हणून आम्ही पण तुमच्या पायाशी आले आहोत". मी म्हणाले आतां तुम्हाला समजलं ना? ते पण वेडे आणि तुम्ही पण वेडे. दोघे सारखेच. मग त्यांना सारं लक्षात आलं.

सुरवातील महाकालीचे प्रगटीकरण वेगवेगळ्या प्रकारे व्हायचे. मला कधी कधी वाटायचं की महाकालीने तिचा प्रभाव कमी केला तर मला इतर काही कार्य करता येईल.

माणसांच्या डाव्या बाजूमधील विघाडामुळे होणारे सर्व त्रास, दुर्धर मानसिक रोग महाकालीच्या कृपेनेच बरे होतात; म्हणून महाकालीचा मंत्र म्हणणं जरूरीच आहे. जोपर्यंत महाकालीचं स्मरण होत नाही तोपर्यंत हे आजार बरे होत नाहीत. या लोकांमधून इतकी कमालीची उघ्यता बाहेर पडते की मलाच समजेनास होतं.

महाकालीचं सूक्ष्म स्वरुप तुम्ही पहाल तर ते 'महा-रुद्र' आहे. त्या देवीबद्दल "अति-रुद्र, अति-सौम्य असं संबोधतात". रुद्र-स्वरुप घेतल्याशिवाय त्या बाधा दूर होणार नाहीत. रुद्र रुपाकडूनच त्याचा नाश होणार. एकादशरुद्रांच्या अकरा रुद्रांची शक्ति ही महाकालीच आहे. त्यांचा वास कपाळावरच्या मेढांमधे असतो, तिथे अकरा चक्र आहेत. एकाद्याला एकादश-रुद्रावर पकड असेल तर त्याला हमखास कॅन्सर किंवा तसलाच दुर्धर रोग आहे हे समजा. सहजयोगाची पद्धत ही शास्त्रीय आणि सर्वांगाने परिपूर्ण आहे. त्यामधे कसलाच दोष सापडणार



नाही.

अलिकडे आता कॅन्सर, एड्स वगैरेचे रोगीसुद्धा येतात आणि सांगतात "माताजी आम्ही कुठल्याही गुरूकडे जात नाही". तुम्ही नसले गेलात तरी तुमच्या आई-वडिलांचा कोणी गुरू असेल.

महाकाली-शक्ति जर या कलियुगात कार्यान्वित झाली नसती तर सहजयोगाच कार्य शक्य झाले नसते. तऱ्हेतऱ्हेच्या या विरोधी शक्तींमुळे चक्रांवर पकड येते आणि ही चक्रं ठीक केल्याशिवाय कुंडलिनी वर येत नाही. म्हणून या महाकाली स्वरूपाची पूजा करून तिचा आदर करायला हवा. त्याच्यामुळे कुणाला कसलाही त्रास होणार नाही. या नुस्त्या रुपामुळे सर्व बाधा दूर जातात.

आजकाल नवरा-बायकोची भांडणं हा एक कठीण प्रश्न झाला आहे. बायका आता शिकलेल्या असतात आणि नवऱ्यांना अडाणी पत्नीच हवी असते. ती तशी नसेल तर काय करायचं ? शहरांत वाढलेली म्हणजे शहरीच होणार - मग लॅगा वापरा वा पॅट वापरा, कारण मनालाच शहरी वळण असते. शहरांत ठळलेल्या स्त्रियांचे स्त्री-तत्त्व कमकुवत होते, पुरुषीपणा अधिक तर स्त्रीपणा कमी. स्त्रीचा सर्वात मोठा गुण म्हणजे विनयशीलता हाच कमी होतो. हा विनय - पावित्र्य - टिकवण्याकरताच राणी पद्मिनीने तीन हजार बायकांसह चितोडच्या किल्ल्यामध्ये जोहार केला. ती कधी तलवार घेऊन बाहेर पडली नाही; पण तशी वेळ आल्यावर झाशीची राणी पण तलवार पाजवून उभी ठाकली. ती लढाई संपल्यावर इंग्रज सेनाधिकारी जनरल रॉस म्हणाला "आम्ही जिंकलो पण झाशीच्या राणीचीच मान उंच झाली". आपल्या देशांत खूप महान, चारित्र्यवान, पतीशी एकरूप झालेल्या आणि स्त्री-धर्माचं उत्तम पालन करणाऱ्या अशा अनेक महिला होऊन गेल्या. त्यांनी आपल्या कुटुंबाचे समजुतदारपणाने पालनपोषण केले. पण महात्मा गांधींनी पुकारल्याबरोबर आपल्या बांगड्यांसकट सर्व दागिने त्यांनी अर्पण केले.

राणा प्रतापची एक गोष्ट आहे. एकदा त्याने एका चित्चोला आपल्या मुलीजवळची गवतापासून केलेली चपाती पळवून नेतना पाहिले. त्याच्या मनात ते पाहून शंका आली की "मी शत्रूला - अकबरला - शरण न जातां हे काय करीत बसले आहे ? हा माझा अहंकार तर नाही ना ?". लगेच तो अकबराला पत्र लिहायला बसला. त्याचवेळी त्याच्या क्षत्रिय पत्नीची शक्ति जागृत झाली; तिने हातात भाला घेतला आणि मुलीसमोर येऊन म्हणाली "तुझ्यामुळे याच्या मनात कमकुवतपणा शिरला आहे म्हणून मी तुलाच ठार मारते". हे सर्व पाहून राणा

प्रतापचे डोळे उघडले.

पूर्वी, स्त्रिया आपल्या पतीच्या कपाळी तिलक लावून युद्धाकरिता निरोप देत असत. हीच त्यांची शक्ति. पण आज त्यांच्याजवळ शक्तिच उरली नाही आणि पुरुष कमजोर झाले आहेत.

ही शक्ति स्त्रियांना त्यांच्या पावित्र्यातून मिळते. जोपर्यंत हे पावत्र्य कार्यान्वित होत नाही तोपर्यंत गृहलक्ष्मी शक्तिचा अविष्कार होत नाही. पण ही गृहलक्ष्मी हुशार तर असायलाच पाहिजे शिवाय समजुतदार पण हवी. याचाच अर्थ महाकाली जेव्हा शांत होते तेव्हा ती गृहलक्ष्मी होऊन जाते.

आपण फातिमाबाईला जाणतो. ती महाकालीची शक्ति घेऊन गृहलक्ष्मीच्या सिंहासनावर आरूढ असते. गृहलक्ष्मी आपल्या मुलांना योग्य मार्गापासून दूर होऊ देत नाही. तिचं चारित्र्य तेजस्वी असते. आपण हे पण जाणतो की अशा तेजस्वी व चारित्र्यवान स्त्रीची निष्ठा व पावित्र्य कुणीही हिरावून घेऊ शकत नाही; कारण तिच्यामध्ये महाकाली शक्ति जागृत असते. अशा स्त्रियांना लोक घाबरतात. पुरुषांनी हे पण समजून घ्यायला हवं की त्यांना कार्यशक्ति स्वीकडूनच मिळत असते; असं जर आहे तर ती स्त्री पवित्र व चारित्र्यावान आहे का हे पाहिलं पाहिजे. ती तशी नसेल तर तिला "गप्प बस" म्हणण्याचा अधिकार पुरुषाला आहे. पावित्र्याबरोबर तिच्यामध्ये अक्कलहुशारी पण हवी. हसतमुख राहण्याची क्षमता असावी, केव्हा व किती हसवं हे पण कळायला हवं. ती अनेक प्रश्नांतून मार्ग काढू शकते कारण तिला सूक्ष्माची जाणीव असते. मी तुम्हाला शरदचंद्राचे वाङ्मय वाचायला सांगितले आहे. त्यांच्या कादंबऱ्यांतील नायिकांनी प्रपंचातील सर्व खाचाळोचातून सुंदरपणे मार्ग काढले आहेत, हे शहाणपण आहे. आपल्याला राजकारणात शिरण्याची जरूर नाही, बेकार आर्थिक चर्चा करण्याची जरूर नाही. समाजाला खरं आधिष्ठान स्त्रीच देऊ शकते. जी स्त्री आपलं घर, पति, मुलंवाळं व संसार उत्तम संभाळते तीच कणखर समाज घडवीत असते. भारतातील अशा कर्तबगार स्त्रियांमुळेच आपला समाज अजून टिकून आहे. तिचा स्वभाव जात्याच आक्रमक नसतो; ती तिच्यामधील पावित्र्यामधूनच सर्व जगाला सांभाळून घेते. ही तिच्यातील देवीचीच शक्ति असते आणि तिचं जीवन देवीसारखं असायला हवं.

महाकाली-शक्तिचं बऱ्याच स्थळांवर कार्य आहे; त्या त्या स्थळांची बाहने आहेत - ती जेव्हा हत्तीवर आरूढ होते तेव्हा तिला ललिता-गौरी म्हणतात. तिची कळा, कसब, भावना सारं सुंदर आणि आदरणीय आहे. तुम्हाला बुरखा घेण्याची, डोकं



झाकून घेण्याची मुळीच जरूर नाही. तुमच्या नजरेत मात्र पावित्र्य हव. ह्या शब्दाला फार मोठा अर्थ आहे, त्यांत बरंच कांही अंतर्भूत आहे. ती सौम्यस्वरुपी आहेच पण महाकाळी असल्यामुळे जो कोणी तिच्याकडे पापी नजरेनें बघेल तो जळून खाक होईल. म्हणून तिच्यासाठी नाही तर तिच्याकडे वाईट नजरेने प्राहणाऱ्याचा नाश होऊं नये म्हणून डोक्यावर वस्त्र घेतात.

महाकालीची शक्ती अशी असते की वरून ती शांत व तेजस्वी वाटली तरी तिची शक्ती आंतून कार्य करीत असते. लोक म्हणतात महाकाली ही रुद्रशक्ति आहे. तिच्या शक्तीचा प्रभाव आश्चर्यकारक असतो. केवढी ही महामाया ! रुप महाकालीचे पण पाहिलं तर अगदी नम्र, विनयशील, जणु नवविवाहितेसारखी लाजरी आणि बावरी. ती बोलली तर फुलं पडत आहेत असं वाटतं. तुमचा विश्वास बसणार नाही. इतकी प्रेमळ, पण ही महाकाली शक्तीच अशी आहे की जिच्याजवळ ती आहे तिच्याजवळपास भूतपण फिरकणार नाही; उलट त्यालाच दुसरं भूत पछाडेल. अशी शक्ति असलेल्या स्त्रीच्या एका कटाक्षांत लोक जळून जातात.

दुसरी शक्ती आहे ती महासरस्वती; जिच्यामुळे आपल्या बुद्धीमध्ये अनेक प्रकारच्या कलेबद्दल व निर्मितीबद्दलच्या कल्पना प्रकाशित व साकार होतात. सरस्वतीच्या म्हणजेच शारदेच्या कृपेनें नवीन नवीन विचार सहजपणे शांतपणे स्फुरण पावतात; सुंदर काव्यपंक्ति फुलतात - निराशेच्या नव्हे तर उत्तेजित करणाऱ्या कविता. आपल्या मायभूमिबद्दल खूप राष्ट्रीय कविता लिहिल्या गेल्या पण लोक आतां त्या विसरले आणि त्याऐवजी ही सिनेमांतली कर्कश घाणेरडी गाणी ऐकू पायला लागली - ते सुद्धां श्रीगणेशांसमोर! जिथे सुज्ञता नाही तिथे हे फालतू प्रकार होतात. अशा लोकांच्या डोक्यांतून भलभलत्या कल्पना निघतात. असाच एक माणूस म्हणजे फ्राईड (Freud). त्याच्याहून जास्त मूर्ख माणूस मी पाहिला नाही. अगदीं निर्लज्जपणे त्यानें आपले विचार सांगितले आणि सर्वांनी त्याला मान्यता दिली ! तुम्ही त्यापैकी नुसती एक ओळ जरी वाचली तरी तो एक निर्लज्ज माणूस नव्हे एक भूत आहे हे तुम्ही जाणाल; त्याने आपली बुद्धी शारदेच्या विरोधी लेखनाकरिता वापरली. मग ते लोण सगळीकडे पसरले - आम्हाला विचार - स्वातंत्र्य आहे म्हणून आम्ही हवं ते लिहिणार ! आजकालचे वर्तमानपत्र चालवणारे पण असेच आहेत. काहीही चित्र - विचित्र कल्पना ते छापतात पण चार चांगल्या गोष्टीबद्दल लिहित नाही. कोण मेला, किती मेले इ. !

शारदादेवी सत्याचा साक्षात्कार देते, ती सत्याचे आधिष्ठान

आहे. आपल्या बुद्धीमध्ये सत्याचा प्रकाश तिच्याकडून येतो. तुम्ही जेव्हां लिहिता तेव्हां त्या विचारांची शक्ती कोटून येते विचार करा. शारदादेवीकडूनच तुम्हाला ही शक्ति मिळत असते.

आजपर्यंत मी कांही लिखाण केलं नाही. आतां मला वाटतं की असं कांही लिहावं जे सगळ्यांच्या डोक्यात शिरेल. लोकांची डोकी अजून बंदच आहेत. ख्रिस्तांनी कांही लिहिलं नाही. महम्मद साहेबांनी पण कांहीच लिहिलं नाही - त्यांना लिहितां - वाचताच येत नव्हते. शारदादेवीच्या कृपेमुळे अनेकांनी विविध लेखन केलं आहे. ज्ञानेश्वरांनी ज्ञानेश्वरी आणि इतर ग्रंथ लिहिले. ज्ञानेश्वरीच्या सुरुवातीलाच ते शारदा देवीला वंदन करतात आणि म्हणतात 'माझ्या शब्दांनी शारदादेवी प्रसन्न होणार आहे; जशी पिसं हळुवारपणे तरंगत जमिनीवर पडतात तसे माझे शब्द तुमच्या हृदयापर्यंत पोचू देत आणि तुमचं हृदय सुगंधित करू देत.' केवढं ज्ञान त्यांनी सहज सांगितले आहे ! त्याचं काव्य इतकं मधुर, कोमल, आल्हाददायक आहे की वाचणाऱ्याला अमृत प्यायल्यासारखं वाटावं ! विल्यम ब्लेक नावांचा एक इंग्लिश कवि होता; त्याच्या कवितांचे पुस्तक (Visions) - तुम्ही वाचा. त्या कविता इतक्या बोलक्या व हृदय हेलावून टाकणाऱ्या आहेत की त्या वाचल्यावर तुम्हाला स्फुरण व उत्साह येईल. त्याच्या शब्दांतून जणु शारदादेवी बाहेर येऊन तुमच्या कानांत बोलू लागते. तुम्ही शरदचंद्र वाचल्यावरही कविता करायला लागाल. भारतामध्ये असे अनेक प्रतिभासंपन्न लोक होते. टॉलस्टॉय हा पण असाच एक महान लेखक.

दक्षिणेमध्ये कुरुप नावाचा एक कवि होता. त्याच्या कविता किती सुंदर होत्या सांगू ? राजस्थानला देवीचे खूप आशीर्वाद मिळाले आहेत. तिथे पण मोठमोठे कवी होऊन गेले. अलेक्झांडर सुद्धा तिथल्या संस्कृतीमुळे प्रभावित झाला होता. म्हणून जातांना प्रणाम करून चांद-वरदाईला घेऊन परतला. चांद-वरदाई मोठा कवी होता आणि राजस्थानी भाषेमध्ये त्याने अलेक्झांडरचं खूप वर्णन केलं आहे. तसाच खुसरो हा एक सुफी होता, कबीरदास, गुरु नानक, रामदास स्वामी - - - काय एक एक कवि. बंगालमध्ये पण एकापेक्षा एक मोठमोठे कवि. हे सर्व शारदा देवीच्या कृपेतून झालं. शब्दाशब्दांतून धर्म, प्रकाश वाहतोय ! इतके सुंदर शब्द निर्विचारतेतूनच आले.

एका मुस्लिम सज्जन माणसाने विचारलं "माताजी, लोक गझल कां गातात ?" तो पुढं म्हणाला की गझल लिहिणारे सर्व कवि त्यांच्या पत्नीवर प्रेम करत नाहीत पण ते दुसऱ्याच कुठल्या मोहात असतात. मी म्हणाले "तुम्हाला कसं माहीत ?" तर म्हणाला "मी स्वतः पाहिलं आहे आणि ते खरं आहे.



त्यांच्या बायका असूनही त्या रडत असतात. आपली बायको असतांना तिच्याबरोबर राहून सुखात आयुष्य घालवायच्या ऐवजी दुसऱ्याच कुठल्या गोष्टीकरता हे लोक दुःख करत वसतात. अशा काव्यलेखनाला शारदादेवीचा आशीर्वाद असेल का ? मग असे लोकही दुसऱ्यांना भ्रमात नेणाऱ्या प्रकारातच मोडतात.

एका माणसाने दारुबद्दल गाणं म्हटलं, मी म्हणाले हा दारुचा पेला कापत नाही आणि तुम्ही तर धरधरत आहात ! तुम्ही कपापेक्षाही कमजोर. त्यानंतर पुन्हा कधी दारुबद्दल तो बोलला नाही. त्याची पत्नी वारली तेव्हा त्याने तिच्यावर एक कविता लिहिली ; पंधरा दिवसातच त्याने दुसरं लग्न केलं आणि त्या नवीन पत्नीवर आणखी एक कविता लिहिली. अशा तऱ्हेचे अनेक फुटकळ कवी आपल्याकडे आहेत. विशेषतः असे की जे प्रत्येक गोष्टीमध्ये देवाचं नाव आणतात. हा मि. एस्. पहा ; तो राधा-कृष्णाचं कसलं प्रेमी - युगुलासारखं चित्र काढतो आहे कळत नाही. कृष्णाला - ज्याला साऱ्या विश्वाची काळजी - असले घाळे करायला वेळ होता का ? राधा - 'रा' म्हणजे शक्ति, 'धा' म्हणजे धारण करणारी - तिला पण असा रिकामटेकडा उद्योग करायला वेळ असतो का ?

झेन कवींनी लिहिलेली कविता सहजयोगी लोकांनाच समजतील. ते कुठल्याही वस्तूचं, तिच्या घातीक सारीक खुल्याचं सुंदर वर्णन करतात आणि सुंदर चित्रातून ते दाखवतात हे फक्त योगीच ओळखू शकतात. आजकाल मुजरामधे पण कव्याली म्हणतात. हे असं शारदादेवीकडून होणारच नाही. संगीतसुध्दा शुध्द हवं, त्यात भेसळ नसावी. ज्यांना असं शुध्द संगीत काय हे समजत नाही तेच लोक असे सरमिसळ करण्याचे प्रकार करतात. खेडेगावातल्या लोकांचं गाणं, शारदादेवीची पूर्ण कृपा झाल्यामुळं फार मधुर असते. शारदादेवीच्या कृपेतूनच मोठमोठे ग्रंथ निर्माण झाले, तसेच प्रसिध्द व नावाजलेली नाटकं आणि कादंबऱ्या लिहिल्या गेल्या. आजकाल मात्र शारदादेवीने आपला हात आखडला आहे व कृपा कमी केली आहे असं वाटतं. या राजस्थानमध्ये कलेमध्ये आता छूपच प्रगती झाली आहे, गेल्या दोन-तीन वर्षात तर ती बहसून आली आहे. ही फक्त शारदादेवीचीच कृपा आहे ; त्याबद्दल शंकाच नको. आपल्या हातांनी पण हे लोक कलाकुसरीच्या सुंदर वस्तू बनवतात. ही कला त्यांच्याजवळ पूर्वी पण होती. लोकांनी त्यांचं कौतुक केले. साध्यासुध्या मातीच्या भांड्यातही कलाकुसर आहे व रंगसंगती आहे. राजस्थानांतले लोकांचे कपडे पण रंगीबेरंगी असतात. त्यांना त्यांचं काही वाटत नाही. पाश्चात्य लोक असे नसतात. ते म्हणतात की कपड्याला बॉर्डर असली तर त्याच्यावर आणखी डिझाईन नको - ती वेगळीच दिसली पाहिजे. हे व्हायला कारण

म्हणजे मेंदूचा हृदयाशी काही संबंध नसतो. मेंदू आणि हृदय एकरूप झाले की मगच लोकांना आनंदाचा वर्षाव म्हणजे काय हे समजू लागतो ; त्या आनंदातूनच रंग निर्माण होतात व ते सगळीकडे पसरतात. ही रंगांची होळी फक्त आपल्या देशातच होते, इतरत्र नाही. सुंदर रंगांची ही उधळण असते ; तीच रंगीबेरंगी साड्यामधून व्यक्त होते. पाश्चात्या देशांत फक्त करड्या रंगाचे कपडे घालतात, ते नाही तर काळ्या रंगाचे कपडे. ते लोक अशी एकादी साडी तरी बनवू शकतात का ?

एक गोष्ट मात्र मला सांगायला हवी ती म्हणजे स्वच्छतेकडे आपण कमी लक्ष देतो. इथल्या बायका स्वच्छ राहतात, घर स्वच्छ ठेवतात पण बाहेर मात्र कमालीची घाण. इथले पुरुषही घराबाहेरच्या स्वच्छतेकडे लक्ष देत नाहीत ; सगळीकडे घाण व कचरा. पाश्चात्या लोक बाहेरची जागा पण स्वच्छ ठेवतात. त्यांना ती आवडच असते. स्वच्छता आणि परिपूर्णता हे सुध्दा शारदादेवीचे आशीर्वाद आहेत. जर अशी घाण असले तर त्या ठिकाणी शारदादेवी कशी येणार ? ही स्वच्छताही नीटसपणे व प्रयत्नपूर्वक जाणीवेमुळे होऊ शकते. शारदादेवीची शक्ति अपार आहे ; तिच्या कृपेला सीमा नाही.

भारतातील स्त्रिया अजून तरी त्यांचे संस्कार विसरल्या नाहीत. ज्या वेळेस त्यांचं चारित्र्य, विनय, पावित्र्य संपेल त्यावेळेसच त्यांच्या अंतरंगातील - त्यांची कला, त्यांच स्त्री-पत्नी-माता-स्वरूप सर्व शुध्दता लयाला जाईल. शारदादेवीच्या कृपेत असणाऱ्या सर्वांनी हे लक्षात ठेवले पाहिजे. असं म्हणतात "कला पडद्याआड ठेवणे हीच कला". तुम्ही जे काय करता त्याच प्रदर्शन करण्याची जरूर नाही. पण शारदादेवीचे पूर्ण आशीर्वाद हवे असतील तर तुम्ही जे काय करता, तुमचे कपडे लत्तेसुध्दा, सर्व दुसऱ्यांकरिता असावं, स्वतःकरिता नसावे. दुसऱ्याची नजर खेचून घेण्याकरता काही करायला नको - आजकाल सिनेतारकांची नांव रस्त्यावरची माणसं असल्यासारखे घेतलं जाते. कुणाला त्यांच्याबद्दल आदर नसतो. जीवनातील प्रत्येक गोष्टीला शारदादेवीचं आधिष्ठान असावं.

तुम्हाला जर शारदादेवीचे आशीर्वाद हवे असतील तर तुमच्या खेड्यातील, देशातील सर्व कलाकारांचा आणि त्यांच्या कलेचा आदर करायला शिका.

आतां नाट्यकलेबद्दल. बंगाल आणि महाराष्ट्रात लोकांना सिनेमाऐवजी नाटक पहाणं आवडते. पण आजकाल नाटकांचा दर्जा खालावला आहे. पुढं आणखी काय होणार आहे समजत नाही. मी तर इतके विचित्र प्रकार पाहिले आहेत की शारदादेवी इधून दूर निघून जाईल. आता आणखी काय घाणेरडे प्रकार सिनेमांत होणार आहेत कुणास ठाऊक. माझ्या हयातीत जर ही



घाण दूर झाली तर मला आनंद होईल.

भारतीय कला फार सुंदर, कोमल आहे. चिनी लोकांची कला सिंहासारखी आहे; ईजिप्तमध्ये असे रंग वापरतात की त्यांच्या चित्रांतली माणसे उभे असली तरी मेलेली वाटतात. इंग्लंड आणि अमेरिकेत लोक जोपर्यंत वास्तववादी होते तोपर्यंत त्यांनी चांगली कला निर्माण केली, नंतर ते थोडे दिखाऊ वृत्तीचे झाले तरी त्यांची कला टिकून होती. पण आजकाल मॉडर्न आर्टच्या नावाखाली चालते ते मला किंवा तुम्हाला समजण्यासारखे नाही. कलेचा दर्जाच इतका खालावला आहे की शारदादेवी इथून फार दूर गेली असली पाहिजे. आश्चर्य म्हणजे जितके घाणेरडे, अधार्मिक व चुकीचे चित्रपट बनतात तितके ते जास्त खपतात !

तुम्हा सर्व सहजयोग्यांना कलेचं ज्ञान हवं व कलेला, विशेषतः हस्तकौशल्याला प्रोत्साहन द्यायला हवं. म्हणजे पर्यावरणाचा प्रश्न पण सुटेल. घरांमध्ये पण पंचवीस प्लॅस्टीक वस्तु वा चाळीस कागदी प्लेट्स ! एकाद-दुसरी सुबक वस्तु असणां चांगलं. हीच आपली भारतीय संस्कृती आहे आणि इथे प्रत्येक परिमाणूला, पेशीला शारदेकडून प्रकाश मिळाला आहे. स्त्रियांनी ही संस्कृती सांभाळली आहे पण आतां पुरुषांनी पण ती समजून घ्याला हवी. तुम्ही नृत्य वा संगीताच्या शुध्द नादामध्ये येता तेव्हा शारदेवीचे आशीर्वाद मिळत असतात. मी बरेच वेळां पाहिलं आहे की जे कलाकार माझ्यासमोर संगीत वा नृत्य सादर करतात ते फार लवकर प्रसिध्दीला येतात. त्यांची कला लोकांना आवडते व ते जास्तच पारंगत होतात. अर्थात शारदेच्या कृपेनेच हे होत असते.

आपल्यामध्ये असणारी तिसरी सक्ति म्हणजे त्रिगुणात्मक शक्ति. ही महालक्ष्मीची शक्ति आहे. महालक्ष्मीची पूजा करण्याचा अधिकार ज्यांना लक्ष्मीचे पुरेपूर आशीर्वाद मिळाले आहेत त्यांनाच आहे. ज्याच्यामुळे आपण साधक बनतो ती महालक्ष्मीचीच शक्ति. कोल्हापूरमध्ये स्वयंभू महालक्ष्मीचे मंदिर आहे. तिथे लोक देवीसमोर जोगवा गातात व म्हणतात 'उदे-उदे अंबे' हे गीत नामदेवांनी सोळाव्या शतकात लिहिले. मी तिथल्या ब्राम्हणांना विचारलं की महालक्ष्मीसमोर तुम्ही अंबा-देवीचे हे गाणं कां म्हणतां तर ते म्हणाले "आम्हाला ते माहीत नाही पण नामदेवांच्या काळापासून असंख्य वेळा ही पध्दत चालली आहे". मग ही अंबा कोण ? ते म्हणाले "अंबा ही सुध्दा देवीच नाही कां ?" मी म्हणाले "तुम्हाला एवढंच माहीत आहे; ते फार अवघड असल्यामुळे मला तुम्हाला समजावून सांगता येणार नाही" ही अंबा महालक्ष्मीच्या मंदिरातच जागृत होते हे कस होते ? आपली मध्य नाडी (सुपुम्ना) ही महालक्ष्मीची आहे, या

मार्गावर तुमच्या डाव्या वा उजव्या बाजूचे होणे आणि बुध्दीच काम सर्व धंड होते आणि तुम्ही मधल्या स्थितीवर येता. यावेळी तुम्ही जे शोधता त्याला महालक्ष्मीचा आशीर्वाद मिळतो. चालाच बायबलमध्ये उध्दारकर्ता असं संबोधलं आहे. ख्रिस्तांनी तीन प्रकार सांगितले. पहिला म्हणजे आरामदायी (Comforter) - हा डाव्या बाजूला, दुसरा उपदेशकार (Counsellor) हा उजव्या बाजूला आणि मध्य मार्गातला उध्दारक (Redeemer). हेच बायबलमधील Holy Ghost चे तीन गुण. तुम्ही जेव्हा मध्य मार्गामध्ये येऊन राहता तेव्हा तुम्ही खरे साधक होता आणि मग महालक्ष्मीचे सर्व आशीर्वाद तुम्हाला मिळतात. महालक्ष्मीच्या या मध्य मार्गामध्ये उत्क्रांत होणां फार अवघड आहे कारण आपलं मन कधी डाव्या बाजूला तर कधी उजव्या बाजूला झुकत राहतं, फक्त कुंडलिनीच्या जागरणानंतरच तुम्ही मध्य मार्गात स्थापित होऊ शकतां प्रथम ती तुम्हाला भवसागरातून पार करते आणि पुढे टाळूवरील ब्रम्हर्ध उघडून परमात्म्याशी भिडते. (ब्रम्हांड) त्यानंतर त्रिगुणात्मक एकत्रितपणे तुम्हाला मदत करते. आज्ञाचक्र पार झाल्यावर तुम्ही महामायेजवळ येता. 'सहस्र महामयी' असं सांगितले आहे की सहस्रार उघडण्याच्या वेळेस ती महामायेचं रूप धारण करते आणि ते रूप जाणण्याचा जास्त जास्त प्रयत्न करता करता तुम्ही सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म, तरलसूक्ष्म अशा वरवरच्या स्थितीमध्ये जाता. इतकी सूक्ष्मता मिळवणं जरूरीचं आहे. आपल्या अंतरंगात जे आहे - जे विशेष आहे. मौल्यवान आहे. अभिमान वाटावा असं आहे - ते जाणण्याकरतां सूक्ष्मातच उतरायला पाहिजे. त्याच्या आड येणारी गोष्ट म्हणजेच आपल्या डाव्या किंवा उजव्या बाजूचा जोर (प्रभाव). त्यासाठीच तुम्ही स्वतःकडे पहायला हवं. आत्परीक्षण करायला हवं - दुसऱ्यांचं नव्हे तर स्वतःचं. हे सर्व करत असताना तुम्ही सहजयोगात प्रस्थापित व्हाल.

जोपर्यंत साधक या स्थितीला येत नाही तोपर्यंत त्याची तळमळ होत असते, नाही तर माझ हे बोलणं नुसते शब्दच राहतील. या स्थितीला प्राप्त केल्यानंतरही ती शक्ति वापरली पाहिजे, नाही तर ही श्रध्दा दृढ होत नाही आणि नंतर निर्विकल्प समाधि अवस्था मिळवायला वेळ लागतो.

आजचं माझं भाषण फार लांबलं कारण विषयच तसा होता. त्रिगुणात्मक अशा तीन शक्तीबद्दल सांगितले पण आदिशक्ति ही त्याच्याही पलीकडे आहे. तिच्याबद्दल सांगणे सोपं नाही ती फार मोठी विशेष शक्ति आहे. तिचं वर्णन करणंही फार अवघड. मी नव्हे तर तुम्हीच ते करू शकाल. ते काम मी तुमच्यावर सोपवते.

परमेश्वराचे सर्वांना अनंत आशीर्वाद.